VIYAKARNAKI PRASHINWTARI

BISHIM PRATAP

व्याकरण की प्रश्नोत्तरी

'हिन्दी-रत्न' तथा 'हिन्दी-भूषण' की परीक्षाओं के व्याकरण के पत्र के लिए सर्वोत्तम सहायक पुस्तक

लेखक

श्रीयुत भीष्म प्रताप शास्त्री, बी. ए.

और

कविराज रामलाल अग्रवाल हिन्दी प्रभाकर, विशारद

संपादक

श्री धर्मचन्द्र विशारद

हिन्दी भवन

लाहौर

प्रथमवार] १९३४ [मूल्य—।≡)

व्याकरण की प्रश्नोत्तरी

'हिन्दी-रत्न' तथा 'हिन्दी-भूषण' की परीक्षाओं के व्याकरण के
पत्र के लिए सर्वोत्तम सहायक पुस्तक

My dear father I am quite well
I hope you are quite well.

लेखक

श्रीयुत भीष्म प्रताप शास्त्री, बी. ए.

और

कविराज रामलाल अग्रवाल हिन्दी प्रभाकर, विशारद

संपादक

श्री धर्मचन्द्र विशारद

हिन्दी भवन

लाहौर

प्रथमवार] १९३४ [मूल्य—।≡)

प्रकाशक—
श्री धर्मचन्द्र विशारद
हिन्दी भवन,
लाहौर

हिन्दी-विलास-चन्द्रिका या हिन्दी-विलास की कुंजी

टीकाकार—पं० केशवप्रसाद शुक्ल विशारद

इसमें विद्वान् लेखक ने हिन्दी-विलास के सब पद्यों की सरल टीका कठिन शब्दों के अर्थ सहित की है। साथ ही साथ पद्यों में आने वाली पौराणिक कहानियाँ भी विस्तार से दी हैं, जो परीक्षा में अवश्य पूछी जाती हैं। इस कुंजी की सहायता से विद्यार्थी बड़ी आसानी से हिन्दी-विलास के सब पद्यों का अर्थ समझ सकते हैं। अर्थों की शुद्धता के विचार से ऐसी कुंजी अब तक तैयार नहीं हुई। मूल्य १॥)

मुद्रक—
श्री देवचन्द्र विशारद
हिन्दी भवन प्रेस,
लाहौर

हिन्दी व्याकरण की प्रश्नोत्तरी

प्र० १—भाषा किसे कहते हैं और व्याकरण किसे? किसी भाषा का व्याकरण पढ़ने से क्या लाभ है?

उ०—भाषा का अर्थ है सार्थक ध्वनि या बोली। सार्थक ध्वनियों द्वारा भाव प्रकट करने की रीति को ही भाषा कहते हैं। पशुओं की बोली से भय क्रोध आदि के सिवाय और कुछ पता नहीं लगता इसलिए उसे भाषा नहीं कह सकते। मनुष्यों की बोली को ही भाषा कहते हैं।

व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जो भाषा के शुद्ध रूप में प्रयोग करने के नियमों को समझाए। व्याकरण पढ़ने का लाभ यही है कि मनुष्य को उस भाषा के नियमों का पूरा-पूरा ज्ञान हो जाता है। यह ठीक है कि साधारणतया लोग बिना व्याकरण पढ़े शुद्ध लिख बोल सकते हैं और अशुद्ध भाषा बोलने पर टोक भी देते हैं, पर 'क्या अशुद्धि हुई' और 'क्यों यह अशुद्धि हुई' यह ज्ञान व्याकरण पढ़े बिना नहीं होता। इस लिए किसी भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए उसका व्याकरण पढ़ना आवश्यक है।

प्र० २—हिन्दी व्याकरण के कितने विभाग हैं? प्रत्येक के लक्षण लिखो।

उ०—वर्णों शब्दों और वाक्यों के विचार से हिन्दी व्याकरण के मुख्य तीन विभाग किये जाते हैं। कोई उन्हें वर्ण-विचार, शब्द-विचार और वाक्य-विचार कहता है, कोई वर्ण

निरूपण, शब्द-निरूपण और वाक्य-निरूपण कहता है तथा कोई वर्णाधिकरण, शब्दाधिकरण, वाक्याधिकरण कहता है।

वर्ण-विचार में अक्षरों या वर्णों के भेद, आकार तथा उच्चारण आदि का वर्णन होता है। शब्द विचार में शब्दों के भेद उत्पत्ति तथा रूपान्तरों आदि का वर्णन होता है तथा वाक्य विचार में शब्दों से वाक्य बनाने के नियम, वाक्य खण्ड और वाक्य भेद आदि का विवेचन किया जाता है।

प्र० ३—वर्ण किसे कहते हैं और वर्णमाला किसे ?

उ०—मूलध्वनि (जिसके टुकड़े न हो सकें) को सूचित करने वाले संकेत या चिह्न को वर्ण कहते हैं। किसी वर्णमाला में प्रयुक्त होने वाले सारे वर्णों के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

प्र० ४—वर्णों के मुख्य कितने भेद हैं ? उनमें परस्पर क्या अन्तर है ? क्ष, त्र, और ज्ञ किस प्रकार के वर्ण हैं ?

उ०—वर्णों के मुख्य दो भेद हैं—स्वर और व्यञ्जन। स्वर उन वर्णों को कहते हैं जो अपने आप (दूसरे वर्ण की सहायता के बिना) बोले जा सकें; जैसे—अ इ आदि। व्यंजन वे वर्ण हैं जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना न हो सके; जैसे—क् ख् आदि। क्ष, त्र, और ज्ञ संयुक्त वर्ण हैं। क् और ष के संयोग से क्ष, त् और र के संयोग से त्र तथा ज् और ञ के संयोग से ज्ञ बनता है।

प्र० ५—अनुस्वार और विसर्ग को हिन्दी व्याकरण वाले व्यञ्जनों में क्यों गिनते हैं ? इनमें तथा व्यंजनों में क्या अन्तर है ?

उ०—हिन्दी व्याकरण वाले अनुस्वार और विसर्ग को व्यञ्जनों में इस लिये गिनते हैं कि ये व्यञ्जनों से अधिक समता रखते हैं और व्यञ्जनों की भाँति स्वर की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते। इन में और व्यंजनों में अन्तर यह है कि स्वर अनुस्वार और विसर्ग से पहले आते हैं तथा दूसरे व्यंजनों के पीछे। अनुस्वार और विसर्ग स्वरों के पहले आते हैं और व्यंजनों के पीछे।

प्र० ६—हिन्दी में ऐसी ध्वनियाँ कौन कौन सी हैं जो संस्कृत में नहीं पाई जातीं? इनको कैसे प्रकट करते हैं?

उ०—हिन्दी में 'ड' 'ढ' की ध्वनियों से कुछ भिन्न दो ध्वनियां और हैं (जैसे 'लड़ना' 'पढ़ना' आदि शब्दों में हैं) जो संस्कृत में नहीं पाई जातीं। हिन्दी वर्णमाला में इनके लिये कोई वर्ण नहीं है। ये ध्वनियाँ ड ढ के नीचे बिंदी देकर प्रकट की जाती हैं। इसके सिवाय उर्दू तथा अंग्रेज़ी आदि दूसरी भाषाओं की ध्वनियों को भी, जो हिन्दी वर्णमाला में पाई जाती हैं; ड ढ के समान उससे मिलते जुलते वर्ण के नीचे बिंदी देकर प्रकट करते हैं। जैसे—क़तल, ख़बर, ग़दर, ज़ालिम, फ़ीस।

प्र० ७—हल् किसे कहते हैं और उस का चिह्न क्या है?

उ०—स्वर रहित व्यञ्जन को हल् कहते हैं। हल् का चिह्न (्) तिरछी रेखा है। जैसे—क् ख् आदि।

प्र० ८—स्वरों के कितने भेद हैं? उनके नाम लक्षण सहित लिखो।

उ०—स्वरों के दो भेद हैं। मूलस्वर और सन्धिस्वर

मूलस्वर वे हैं जो किन्हीं दो स्वरों के मेल से नहीं बने। हिन्दी में मूल स्वर चार हैं—अ, इ, उ, ऋ, (ऌ का व्यवहार संस्कृत में ही होता है)।

सन्धिस्वर वे हैं जो मूलस्वरों के मेल से बने हैं। ये हिन्दी में सात हैं—आ (अ+अ), ई (इ+इ), ऊ (उ+उ), ए (अ+इ या आ+इ), ऐ (अ+ए या आ+ए), ओ (अ+उ या आ+उ), औ (अ+ओ या आ+ओ)।

प्र० ९—मात्रा किसे कहते हैं ?

एक मूल वर्ण के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।

प्र० १०—ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत किसे कहते हैं और प्लुत का उपयोग कहाँ होता है ?

उ०—ह्रस्व—जिन वर्णों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उन्हें ह्रस्व या एक मात्रिक कहते हैं—जैसे अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ—जिनके उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे उन्हें दीर्घ या द्विमात्रिक कहते हैं जैसे आ, ई, ऊ, ए

प्लुत—जिनके उच्चारण में ह्रस्व से तिगुना समय लगता उन्हें प्लुत कहते हैं। प्लुत का उपयोग दूर से बुलाने या पुकारने में होता है इसे प्रकट करने के लिए प्रायः तीन (३) का अंक लिख दिया है। जैसे—अरे मोहन ३, अरे सोहन ३।

प्र० ११—उच्चारण स्थान किसे कहते हैं ? वे कितने हैं ? किस-किस वर्ण का कौन-कौन सा उच्चारण स्थान है ?

उ०—मुख के जिस भाग से जो अक्षर बोला जाता है, वह उस अक्षर का उच्चारण स्थान कहाता है।

उच्चारण स्थान ६ हैं—कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ और नासिका ।

अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है
इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श का ,, तालु है
ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष का ,, मूर्द्धा है
त, थ, द, ध, न, ल और स का ,, दन्त है
उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म का ,, ओष्ठ है
अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है
ङ, ञ, ण, न, म, ये अपने अपने वर्ण के स्थान से तथा नासिका से बोले जाते हैं । इस लिए इनके उच्चारण स्थान दो-दो हैं ।
ए और ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है
ओ और औ ,, कण्ठ और ओष्ठ है
व का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है ।

प्र० १२—व्यञ्जनों के मुख्य कितने विभाग हैं ? उनके नाम क्या हैं ?

उ०—व्यञ्जनों के मुख्य तीन विभाग हैं—स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म ।

प्र० १३—स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म वर्ण कौन २ से हैं और उनके ये नाम क्यों पड़े ?

उ०—'क' से 'म' तक व्यञ्जन स्पर्श कहाते हैं क्योंकि इनके बोलने में कण्ठ, तालु आदि स्थानों से जिह्वा का पूरा स्पर्श होता है। य र ल व अन्तस्थ हैं। स्वरों और व्यञ्जनों के मध्यवर्ती होने से इनको अन्तस्थ कहते हैं।

श, ष, स, ह—ऊष्म कहाते हैं, क्योंकि इनके बोलने में

उच्चारण मार्ग के तंग होने से एक प्रकार की रगड़ पैदा हो कर ऊष्म (गर्म वायु) निकलती है।

प्र० १४—अनुस्वार और अनुनासिक में क्या भेद है

उ०—अनुस्वार (ं) केवल नाक से और अनुनासिक (ँ) मुख और नासिका से बोला जाता है। अनुस्वार की ध्वनि तीव्र और अनुनासिक की धीमी होती है।

प्र० १५—अयोगवाह वर्ण कौन कौन से हैं ?

उ०—अनुस्वार और विसर्ग को संस्कृत व्याकरण वाले अयोगवाह कहते हैं।

प्र० १६—सानुनासिक व्यंजन कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

उ०—ङ, ञ, ण, न, म, ये पाँचों सानुनासिक व्यञ्जन कहाते हैं।

प्र० १७—लिपि किसे कहते हैं ? हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है ?

उ०—भाषा जिस रूप में लिखी जाती है उसे लिपि कहते हैं। हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

प्र० १८—मात्रा किसे कहते हैं ? ई, ऋ, ऊ, औ की मात्राएं लिखो। र में उ, ऊ की मात्राएं जोड़कर लिखो ?

उ०—व्यञ्जनों के पीछे जोड़ने पर स्वरों का जो रूप बनता है उसे मात्रा कहते हैं। ई (ी) ऋ (ृ) ऊ (ू) औ (ौ) र+उ=रु, र+ऊ=रू।

प्र० १९—स्वराघात किसे कहते हैं इसका प्रयोजन क्या होता है, उदाहरण दो।

उ०—किसी शब्द को बोलते हुए उसके किसी अक्षर या स्वर पर अधिक ज़ोर डाला जाता है, इसे स्वराघात या बल कहते हैं। अनेक (भिन्न) अर्थों वाले एक रूप शब्दों का कहाँ कौन अर्थ लेना चाहिए—यह निश्चय स्वराघात ही से होता है। जैसे—'बना' शब्द दो अर्थों का सूचक है—आज्ञा और भूत-काल। यदि दूसरे अक्षर 'ना' पर स्वराघात हो तो 'आज्ञा' का अर्थ लिया जाता है जैसे--रोटी बना। यदि पहले अक्षर 'ब' पर स्वराघात हो तो भूतकाल का अर्थ लिया जाता है, जैसे--बहुत अच्छा भोजन बना।

प्र० २०—ख, घ छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ का द्वित्व संयोग होता है या नहीं ?

उ०—ख, छ, घ, आदि का द्वित्व संयोग नहीं हो सकता। क्योंकि इनका द्वित्व रूप में उच्चारण नहीं हो सकता। इस लिये द्वित्व संयोग में पूर्ववर्ती वर्ग के दूसरे और चौथे वर्ण उच्चारण के अनुसार पहले और तीसरे वर्ण (क्, च्. ग्, ज्) आदि हो जाते हैं। जैसे—रक्खा, बग्घी झज्झर आदि।

प्र० २१—वर्णों के संयोग के कुछ नियम लिखो।

१—कहीं तो संयुक्त वर्णों का रूप ऐसा बदल जाता है कि उन में मूल-वर्णों का कुछ पता ही नहीं लगता।

जैसे—ज् + ञ = ज्ञ—प्रतिज्ञा, ज्ञान।

क् + ष = क्ष—क्षय, क्षमा।

त् + र = त्र—त्राण त्रिलोकी।

२—जिन वर्णों के अन्त में खड़ी पाई (लकीर) रहती है उन का मेल यदि परे के व्यञ्जन से हो तो खड़ी पाई गिर जाती है। जैसे—भाग्य, ज्योति, अगण्य, त्याग, अकथ्य, ध्यान, न्याय, प्यार व्यापारी, सभ्य, म्यान, कल्याण, श्याम, विष्णु, स्याह।

३—ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, ह ये व्यञ्जन अगले (बाद में आने वाले) व्यञ्जन के साथ संयुक्त होते हुए ऊपर लिखे जाते हैं और इनका अगला व्यञ्जन बिना सिर के नीचे लिखा जाता है। जैसे--शङ्का उच्छ्वास, सट्टा, मट्ठा, गड्ढा, प्रह्लाद। किन्तु यदि इन का य के साथ संयोग हो तो य इनके पीछे लगता है। जैसे--अकाट्य, पाठ्य, ड्योढ़ी, ढ्योंचा, सह्य।

४--क, व, ल, श—ये वर्ण यदि दूसरे वर्णों के साथ संयुक्त हों तो ये पहले और नीचे दोनों जगह जोड़े जाते हैं। जैसे---पक्का पक्का, पल्लव, पल्लव; शुक्ल, शुक्ल; श्वेत, श्वेत।

५—द से मिले वर्ण प्रायः द के नीचे की रेखा से मिले रहते हैं; जैसे—विद्या, सद्म, द्वार, श्राद्ध।

६—ष यदि ट, ठ से मिले तो उनके ऊपर रहता है। जैसे—इष्ट, षष्ठ।

७—(क) स्वर-रहित र् के बाद जब कोई व्यञ्जन हो तो र् उस व्यञ्जन के ऊपर चला जाता है और उसका रूप (र्‍) हो जाता है। जैसे—तर्क, अर्थ इत्यादि।

(ख) जिस अक्षर के ऊपर र् चढ़ता है वह विकल्प से द्वित्व हो जाता है। जैसे—धर्म, धर्म्म; पूर्व, पूर्व्व; चर्म, चर्म्म; कार्य, कार्य्य; धैर्य, धैर्य्य; इत्यादि।

(ग) खड़ी पाई वाले व्यञ्जनों के परे र् हो तो उसका रूप खड़ी पाई के नीचे (्र) इस तरह हो जाता है। जैसे—वज्र, प्रथम, नम्र, भ्राता।

(घ) अन्य व्यञ्जनों के नीचे उसका (्) रूप हो जाता है; जैसे—राष्ट्र, ड्रामा।

८—ङ, ञ, ण, न, म अपने ही वर्ग के व्यञ्जनों से मिल सकते हैं पर उनके बदले में विकल्प से अनुस्वार आ सकता है।

जैसे—अन्धा, अंधा। गङ्गा, गंगा। चञ्चल, चंचल। दन्त, दंत। कम्प, कंप।

प्र० २२—शब्द किसे कहते हैं ?

उ०—एक या अनेक वर्णों से मिलकर बनी हुई ध्वनियों को शब्द कहते हैं। शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक और निरर्थक। सार्थक वे हैं जिनसे किसी अर्थ का बोध हो। जैसे—घड़ा, इस शब्द से मट्टी के बने हुए एक बर्तन का बोध होता है जिस में पानी रक्खा जाता है, इसलिये 'घड़ा' शब्द सार्थक है। निरर्थक वे हैं जिनसे किसी अर्थ का बोध न हो, जैसे—अल्लबल्ल आदि। व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है, इसलिए शब्द का यह लक्षण करना चाहिए—एक या अनेक वर्णों से बनी हुई स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।

प्र० २३—शब्दांश किसे कहते हैं ?

उ०—भाषा में कई शब्द या ध्वनियाँ ऐसी होती हैं जिन का स्वयं कुछ अर्थ नहीं होता पर जब वे दूसरे शब्दों से मिल जाती हैं तो सार्थक हो जाती हैं। ऐसी परतन्त्र ध्वनियों को शब्दांश कहा जाता है। जैसे—प्र, पन, वाला इत्यादि का कुछ अर्थ नहीं, पर 'प्रकोप' 'बचपन' और 'दूधवाला' आदि शब्दों में ये ध्वनियाँ भी सार्थक हो गई हैं

प्र० २४—व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द कितने प्रकार के हैं ?

उ०—व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों के तीन भेद हैं—रूढ़ि, यौगिक और योगरूढ़ि।

१—रूढ़ि वे शब्द हैं जो किसी अन्य शब्द के योग से न बने हों या जिन का वैसे कुछ अर्थ न हो पर किसी ख़ास वस्तु के लिए निश्चित हो गये हों। जैसे—घोड़ा, खाट, लाल, पीला आदि।

ये शब्द न तो दूसरे शब्दों के योग से बने हैं और न इनका कुछ अर्थ है पर ये वस्तु विशेष के लिए निश्चित हो गये हैं अतः रूढ़ि हैं।

२—यौगिक—जो शब्द प्रकृति प्रत्यय अथवा दूसरे शब्दों के योग से बनें। जैसे—पाठशाला पानवाला, देवालय, घुड़सवार। पाठशाला शब्द—पाठ + शाला इन दो शब्दों के योग से बना है। पानवाला शब्द में 'पान' शब्द और वाला तद्धित प्रत्यय है।

३—योगरूढ़ि—जो शब्द यौगिक होने पर भी अपने सामान्य अर्थ को प्रकट न करते हुए रूढ़ि शब्दों के समान किसी विशेष वस्तु के लिए निश्चित हों, वे 'योगरूढ़ि' कहाते हैं। जैसे—पङ्कज (पङ्क+ज) का अर्थ है कीचड़ से उत्पन्न, परन्तु पंकज केवल कमल को ही कहते हैं, कीचड़ से उत्पन्न कीड़े आदि को नहीं। इसी प्रकार अँगरखा, चारपाई, पीताम्बर आदि।

प्र० २५—हिन्दी भाषा में कितने प्रकार के शब्द पाये जाते हैं ?

उ०—हिन्दी भाषा में चार प्रकार के शब्द पाये जाते हैं। तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।

तत्सम—संस्कृत के वे शब्द जो विना किसी रूपपरिवर्तन के हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे माता, पिता, राजा, नदी, पर्वत आदि।

तद्भव—वे शब्द जो संस्कृत भाषा के शब्दों से उत्पन्न हुए हैं। जैसे—खेत, सेज, मेंह, दूध आदि। ये शब्द क्रमशः क्षेत्र, शय्या, मेघ और दुग्ध आदि शब्दों से बने हैं।

देशज—वे शब्द हैं जिनका संस्कृत से कोई सम्बन्ध नहीं है। जो पदार्थ के रूप, कार्य या ध्वनि के अनुसार कल्पित अथवा प्राचीन काल से देश में प्रचलित हैं। जैसे—पगड़ी, खिड़की, रोड़ा टीला, खटखट, रिमझिम आदि

विदेशी—वे शब्द जो अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी आदि विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आ गये हैं। जैसे—डाक्टर, तोप, पादरी, कमर आदि।

प्र० २६—अर्थ के विचार से शब्दों के कितने भेद हैं? प्रत्येक के उदाहरण दो?

उ०—अर्थ के विचार से शब्दों के आठ भेद हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, योजक, द्योतक या विस्मयादि बोधक।

संज्ञा—किसी वस्तु,स्थान, भाव या मनुष्य के नाम बतानेवाले शब्द संज्ञा कहाते हैं। जैसे—घोड़ा, बिल्ली, मिठास, मोहन।

सर्वनाम—संज्ञा के बदले प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। जैसे—यह, मैं, तू, आप, कब आदि।

विशेषण—संज्ञा की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द विशेषण कहाते हैं। जैसे—'अरबी घोड़ा' 'धार्मिक क्रिया' 'सुन्दर रंग' 'मीठा दूध' में अरबी, धार्मिक, सुन्दर, मीठा शब्द विशेषण हैं।

४. क्रिया—जिससे किसी बात का करना या होना पाया जाय उसे 'क्रिया' कहते हैं; जैसे—लिखता हूँ, खायेंगे!

५. क्रिया विशेषण—जो शब्द किसी क्रिया की विशेषता बतावें वे क्रियाविशेषण कहाते हैं; जैसे—जल्दी चलो, अभी नहीं आया—यहाँ पर 'जल्दी' और 'अभी' क्रियाविशेषण हैं।

६. सम्बन्ध बोधक—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध बतावें वे सम्बन्ध बोधक अव्यय कहाते हैं। जैसे—भीतर, पीछे, तक; घर के भीतर, ग्राम तक।

७. योजक—दो शब्दों या दो वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द—और, पर आदि। जैसे—मैं और तू, थोड़ा खाओ पर चबाओ खूब।

८. विस्मयादि बोधक—जिन से बोलने वाले के मन के आकस्मिक भाव जाने जायँ। जैसे—आहा, हाय, साधु आदि।

प्र० २७—कौन शब्द विकारी हैं और कौन अविकारी और क्यों?

उ०—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया—ये विकारी हैं क्योंकि लिंग, वचन, कारक के अनुसार इनके रूपों में विकार (परिवर्तन) होता है। जैसे—लड़का, लड़के, वह, उसने आदि। क्रियाविशेषण सम्बन्ध बोधक, योजक, द्योतक—ये अव्यय या अविकारी हैं क्योंकि इनके रूप में कोई विकार नहीं होता। जैसे—और, तो, यद्यपि, वाहवा आदि।

प्र० २८—'रूपान्तर' से क्या अभिप्राय है?

उ०—लिङ्ग वचन और कारक के अनुसार संज्ञादि विकारी शब्दों के रूप में जो परिवर्तन होता है, उसे रूपान्तर कहते हैं।

प्र० २९—संज्ञा के भेद और उनके लक्षण बताओ?

उ०—संज्ञा के तीन भेद हैं—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, और भाववाचक।

१. व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ वे हैं जिन से एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है। जैसे—रवीन्द्रनाथ, लाहौर, गङ्गा, हिमालय आदि।

२. जातिवाचक संज्ञाएँ वे हैं जिन से एक जाति के सब पदार्थों का बोध होता है। जैसे—मनुष्य, नगर, नदी, पहाड़ आदि।

३. भाव वाचक संज्ञाएँ वे हैं जिन से पदार्थों के धर्म, गुण, दोष अवस्था व्यापार आदि भाव जाने जाते हैं। जैसे—मिठास, चोरी, लड़कपन, दौड़, स्याही, क्रोध, भय, विद्या आदि।

कई वैयाकरण (विशेषतः अंग्रेज़ी व्याकरण का अनुसरण करने वाले) संज्ञा के दो भेद और भी करते हैं। सभा, सेना,

संघ आदि व्यक्तियों के समूह को प्रकट करने वाली संज्ञाओं को वे 'समूह वाचक' कहते हैं और आग, पानी, दूध, सोना चाँदी आदि संज्ञाओं को, जो द्रव्यों का बोध कराती हैं वे द्रव्यवाचक कहते हैं। पर वास्तव में ये दोनों संज्ञाएँ जातिवाचक के अन्दर ही आ जाती हैं क्योंकि सभा, सेना आदि से सभी तरह की सभाओं और सेनाओं का बोध होता है। इसी प्रकार द्रव्य वाचक शब्दों से उस प्रकार के सब द्रव्यों का बोध होता है इसलिए इन दोनों को जातिवाचक के अन्तर्गत ही समझना चाहिए।

प्र० ३०—व्यक्तिवाचक संज्ञा कब जातिवाचक होती है और जातिवाचक कब व्यक्तिवाचक ?

जब व्यक्ति वाचक नाम किसी विशेष गुण को प्रकट करते हैं तब वे जाति वाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे—"कोई समय था जब भारत में घर घर में सीता अनुसूया थीं, अब जहाँ देखो कैकेयी और मन्थरा दिखाई देती हैं।" यहाँ सीता और अनुसूया शब्द उनका सा गुण (पति भक्ति) रखने वाली तथा कैकेयी और मन्थरा उनके से अवगुण (ईर्ष्या) रखने वाली सब स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुए हैं अतः ये जातिवाचक हैं।

जहाँ कोई जाति वाचक संज्ञा किसी व्यक्ति विशेष के लिए ही प्रयुक्त हो या प्रसिद्ध हो जाय तब जाति वाचक होते हुए भी व्यक्ति वाचक कहलाती है। जैसे—'मालवीय जी कल यहाँ पधारेंगे' 'गोखले एक असाधारण पुरुष थे', 'गाँधी जी ही देश के एक मात्र नेता हैं—इन वाक्यों में मालवीय, गोखले और गांधी जाति वाचक शब्द होने पर भी विशेष व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुए हैं इस लिए व्यक्तिवाचक हैं।

प्र० ३१—बहुवचन में साधारणतया कौनसी संज्ञाएँ संयुक्त होती हैं !

उ०—जातिवाचक संज्ञाएँ ही साधारणतया बहुवचन में आती हैं। व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ प्राय: एक वचन में ही प्रयुक्त होती हैं।

प्र० ३२—भाववाचक संज्ञाएं किन शब्दों से बनती हैं ?

उ०—भाववाचक संज्ञाएँ तीन प्रकार के शब्दों से बनती हैं—

१. जतिवाचक संज्ञा से—लड़कपन (लड़का से) पण्डिताई (पण्डित से) मित्रता (मित्र से) पशुता (पशु से) दासता (दास से) बुढ़ापा (बूढ़ा से)

२. क्रिया से—चढ़ाई (चढ़ना से) सजावट (सजाना से) दौड़ (दौड़ना से) बहाव (बहना से) घबराहट (घबराना से) चाल (चलना से)

३. विशेषण से—चतुराई (चतुर से) मिठास (मीठा से) बुद्धिमानी (बुद्धिमान से) आलस्य (आलसी से) गरमी (गरम से) अम्लता (अम्ल से)

प्र० ३३—क्या संज्ञा से भिन्न शब्द भी कभी संज्ञा के समान प्रयुक्त होते हैं ? होते हों तो उनके कुछ उदाहरण दो।

उ०—विशेषण क्रिया विशेषण आदि संज्ञा से भिन्न शब्द भी कई बार संज्ञा के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

'गुणियों का आदर करो' 'बड़ों का कहा मानो' इन वाक्यों में गुणियों और 'बड़ों' ये दो विशेषण संज्ञा के समान प्रयुक्त हुए हैं। 'यहां का जल वायु अच्छा है'— उसका भीतर बाहर एक सा है' इन वाक्यों में "यहां" और "भीतर-बाहर" जो प्राय: क्रिया विशेषण होते हैं संज्ञा के रूप में

प्रयुक्त हुए हैं। 'हाय हाय क्यों मचा रक्खी है' 'अच्छे काम करो और वाह वाह लूटो' इन वाक्यों में 'हाय हाय' और 'वाह वाह' द्योतक अव्यय संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

दूसरा अध्याय

लिङ्ग, वचन, कारक।

प्र० ३४—लिङ्ग किसे कहते हैं हिन्दी में लिङ्ग कितने हैं ?

उ०—संज्ञा पुरुष जाति की बोधक है या स्त्री जाति की, यह जिससे जाना जाय उसे 'लिङ्ग' कहते हैं। पुरुष जाति का बोधक लिङ्ग "पुँलिङ्ग" और स्त्री जाति का बोधक लिङ्ग "स्त्री लिङ्ग" कहाता है। हिन्दी में दो ही लिङ्ग हैं। संस्कृत और अंग्रेज़ी के समान हिन्दी में नपुंसिक लिङ्ग नहीं है।

प्र० ३५—प्राणिवाचक शब्दों में लिंग कैसे जाने जाते हैं और अप्राणिवाचक शब्दों या निर्जीव पदार्थों में कैसे ?

उ०—जो प्राणिवाचक संज्ञाएँ पुरुष वाचक हैं वे पुँल्लिङ्ग होती हैं और जो स्त्री वाचक हैं वे स्त्री लिङ्ग होती हैं। जैसे—पिता (पु०) माता (स्त्री०), बैल (पु०) गाय (स्त्री)। इस प्रकार प्राणिवाचक संज्ञाओं का लिङ्ग भेद तो जान लिया जाता है किन्तु अप्राणिवाचक पदार्थों की संज्ञाओं का लिङ्ग भेद जानने में कठिनता होती है। कोई ऐसा व्यापक नियम नहीं जिससे यह कठिनता दूर हो। साधारणतः शिष्टों की बोल चाल को ध्यान-पूर्वक सुनने और लेखकों की पुस्तकों को

पढ़ने से ही ऐसे शब्दों में लिंग भेद का ज्ञान हो सकता है। फिर भी कुछ नियम यहाँ दिये जाते हैं।

१. प्रायः जिन शब्दों का उच्चारण भारी-सा है वे पुँल्लिङ्ग, और इसके विपरीत स्त्री लिङ्ग होते हैं, जैसे लट्ठ (पुं०) लाठी या लठिया (स्त्री०) छप्पर (पुँ०) छपरी (स्त्री०)

२. संस्कृत के पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसिक लिङ्ग शब्द जो हिन्दी में आते हैं वे प्रायः पुँल्लिङ्ग और संस्कृत के स्त्री लिङ्ग शब्द जो हिन्दी में प्रयुक्त हैं स्त्रीलिङ्ग ही रहेंगे। जैसे जगत्, देश, धन आदि पुँल्लिङ्ग, सुन्दरता, आशा, दिशा आदि स्त्री लिङ्ग होते हैं।

३. आ, आव, पा, पन, न, जिनके अन्त में हो वह प्रायः पुँल्लिङ्ग और आई, वट, हट जिनके अन्त में हो ऐसे शब्द स्त्री लिंग जैसे—सोटा, चढ़ाव, बुढ़ापा, लड़कपन, लेन देन (पुँ०) और चढ़ाई, सजावट, चिल्लाहट आदि स्त्रीलिङ्ग।

प्र०३६—कुछ ऐसी संज्ञायें लिखो जो नित्य स्त्री लिंग या नित्य पुँल्लिंग रहती हैं? उनमें जाति-भेद कैसे प्रकट किया जाता है?

कई प्राणिवाचक संज्ञाएँ स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों की बोधक होने पर भी व्यवहार के अनुसार नित्य पुँल्लिङ्ग या नित्य स्त्रीलिङ्ग होती हैं। जैसे—उल्लू, कौआ, खटमल, चीता कवि, दम्पति, शिशु, भेड़िया, आदि शब्द नित्य पुँल्लिङ्ग हैं और कोयल, चील, मक्खी आदि नित्य स्त्रीलिंग। जाति भेद प्रकट करने के लिए इनके पहले पुरुष या स्त्री अथवा नर या मादा शब्द जोड़ा जाता है। जैसे—नर चीता, मादा चीता। पुरुष कवि, स्त्री कवि।

प्र० ३६—पुँल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग और स्त्रीलिंग से पुँल्लिङ्ग बनाने के नियम लिखो।

उ०—पुँल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के नियम नीचे दिये जाते हैं।

१. अकारान्त व आकारान्त शब्दों के अन्त में प्रायः "ई" प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे—लड़का–लड़की बन्दर–बन्दरी।

२. कुछ आकारान्त शब्दों के अन्त में 'इया' प्रत्यय लगता है और पहला स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—चूहा–चुहिया बूढ़ा–बुढ़िया।

३. पेशा-सूचक पुँल्लिग शब्दों के अन्त में 'इन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं। सुनार–सुनारिन; कहार–कहारिन।

४. कुछ अकारान्त शब्दों के अन्त में 'नी' प्रत्यय और कुछ में 'आनी' लगाने से भी स्त्रीलिंग बनता है—जाट–जाटनी मेहतर–मेहतरानी।

५. उपनामवाचक शब्दों के अन्त में प्रायः 'आइन' प्रत्यय लगता है और पहला स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—पांडे–पंडाइन, ठाकुर–ठाकुराइन।

६. संस्कृत से आये हुए पुँल्लिंग शब्दों के साथ प्रायः संस्कृत के स्त्री प्रत्यय ही लगाये जाते हैं। जैसे—देव–देवी, प्रबन्धकर्ता प्रबन्धकर्त्री

७. कई पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बिल्कुल भिन्न होते हैं—

पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री
पिता	माता	मर्द	औरत	बैल	गाय
बाप	माँ	भाई	बहन	राजा	रानी

इसी प्रकार स्त्रीलिंग शब्दों में भी 'आ' 'उआ' 'ओई' 'आव' आदि प्रत्यय लगाने से वे पुरुषवाचक बन जाते हैं। जैसे—

भैंस	भैंसा	बहन	बहनोई
भेड़	भेड़ा	ननद	ननदोई
राँड	रँडुवा	बिल्ली	बिलाव

प्र० ३७—वचन किसे कहते हैं? हिन्दी में कितने वचन होते हैं!

उ०—संज्ञा आदि विकारी शब्दों के जिस रूप से वस्तु की संख्या (एक या एक से अधिक होने) का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं! हिन्दी में एक वचन और बहुवचन ये दो ही वचन होते हैं।

प्र० ३८—एकवचन और बहुवचन का लक्षण उदाहरण सहित लिखो?

उ०—शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे 'एक वचन' कहते हैं। जैसे—लड़का खेलता है। बंदरी नाचती है।

शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है उसे 'बहुवचन' कहते हैं। जैसे—लड़के खेलते हैं। बंदरियाँ नाचती हैं।

प्र० ३९—एकवचन के अर्थ में बहुवचन और बहुवचन के अर्थ में एकवचन कहाँ प्रयुक्त होता है?

उ०—आदर या गौरव के लिए एकवचन के स्थान में बहुवचन आता है; जैसे—चचा आए, राजा हरिश्चन्द्र बड़े दानी थे। (अपने लिए साधारणतः एकवचन बहुवचन दोनों ही

आते हैं—मैं गया, हम गये)। जाति वाचक शब्द कभी-कभी एकवचन में भी बहुवचन का बोध कराते हैं। जैसे—कुत्ता बड़ा स्वामिभक्त होता है (सब कुत्ते)। उसके पास कई लाख रुपया है (रुपये हैं)। बंबई में केला बहुत होता है (केले बहुत होते हैं)।

प्र० ४०—एकवचन से विभक्तिरहित बहुवचन बनाने के नियम लिखो—

उ०—(क) आकारान्त शब्दों को छोड़कर शेष सब पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप एकवचन और बहुवचन में समान ही रहते हैं। जैसे—घर, मुनि, भाई, वायु, चाकू, चौबे आदि। इनके अतिरिक्त कुछ आकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द भी ऐसे हैं जिनके एकवचन और बहुवचन के रूप समान ही होते हैं। जैसे—दादा, नाना, मामा, राजा, ब्रह्मा आदि। शेष आकारान्त शब्दों के अन्त्य 'आ' को बहुवचन में 'ए' हो जाता है। जैसे—लड़का—लड़के, कपड़ा—कपड़े, भतीजा—भतीजे, पोता—पोते आदि।

(ख) अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्तिम 'अ' को 'एँ' कर देते हैं। जैसे—बहन—बहनें, पुस्तक—पुस्तकें, आँख—आँखें।

(ग) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के आगे 'याँ' और ईकारान्त शब्दों की अन्तिम 'ई' को ह्रस्व करके 'याँ' जोड़ देते हैं। जैसे—(इकारान्त) जाति—जातियाँ, शक्ति—शक्तियाँ, (ईकारान्त) रोटी—रोटियाँ, रानी—रानियाँ, लड़की—लड़कियाँ।

(घ)—आकारान्त और उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के आगे

'एँ' लगा देते हैं। ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्तिम 'ऊ' को ह्रस्व करके उसके आगे 'एँ' लगा देते हैं जैसे—

आकारान्त—लता—लताएँ, माता—माताएँ।

उकारान्त—वस्तु—वस्तुएँ ऋतु—ऋतुएँ।

अकारान्त—बहू—बहुएँ।

(ङ)—'या' जिनके अन्त में हो ऐसे स्त्रीलिंग शब्दों के 'या' के ऊपर अनुस्वार लगा दिया जाता है। जैसे—डिबिया—डिबियाँ।

कारक

प्र० ४१—कारक किसे कहते हैं और विभक्ति किसे?

उ०—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा उस का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है उसे कारक कहते हैं। कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो चिह्न लगाये जाते हैं उन्हें विभक्तियाँ कहते हैं। जैसे—'इन वृक्षों पर बहुत से फल लगे हैं' इस वाक्य में 'वृक्षों पर' यह कारक है और कारक-सूचक 'पर' चिह्न उसकी विभक्ति है।

प्र० ४२—हिन्दी में कितने कारक हैं, उनके नाम लक्षण और विभक्तियाँ उदाहरण सहित लिखो।

हिन्दी में ८ कारक है। इनके नाम, विभक्तियाँ और लक्षण आगे दिये जाते हैं—

१. कर्ता कारक—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है उसे कर्ता कारक कहते हैं; इसमें 'ने' विभक्ति लगती है, कभी-कभी कोई विभक्ति नहीं लगती। जैसे 'श्याम गया' 'राम ने खाना खाया' इनमें 'श्याम' और

'राम' कर्ता कारक हैं क्योंकि इनसे जानेवाले और खानेवाले का बोध होता है।

२. कर्म कारक—जिस वस्तु पर क्रिया का फल पड़ता है उसे सूचित करनेवाले संज्ञा के रूप को कर्म कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है पर कभी-कभी 'को' का लोप हो जाता है। जैसे—"मैंने पत्र लिखा", "कृष्ण ने कंस को मारा" इन वाक्यों में लिखने का फल 'पत्र' पर है और मारने की क्रिया कंस पर की गई है अतः 'पत्र' और 'कंस को' कर्म कारक हैं।

३. करण कारक—संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो उसे करण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'से' है। जैसे—"राम पेंसिल से पत्र लिखता है" इस वाक्य में 'पेंसिल से' करण कारक हैं क्योंकि यह प्रकट करता है कि लिखने की क्रिया पेंसिल द्वारा हो रही है।

४. संप्रदान कारक—जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिए कुछ किया जाय उसे बोध करानेवाले संज्ञा के रूप को संप्रदान कहते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है। संसार की भलाई करने को ही महापुरुषों का आगमन होता है। लड़का पढ़ने को गया। राम को मैंने ५) दिये। इन वाक्यों में 'भलाई 'करने को' 'पढ़ने को' 'राम को' संप्रदान कारक हैं।

५. अपादान कारक—संज्ञा के जिस रूप से पृथकत्व का बोध होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। करणकारक की तरह इसकी विभक्ति भी 'से' है। 'अभी अभी स्कूल से आ रहा हूँ' इस वाक्य में 'स्कूल से' अपादानकारक है।

अपादानकारक का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में भी होता है—

(क) जहाँ से कोई क्रिया आरम्भ की जाय; जैसे—आज से स्कूल बन्द है।

(ख) तुलना प्रकट करने में जैसे—भरत राम से छोटे थे।

(ग) जिससे पढ़ा जाय, जिससे लज्जा आये, जिससे उत्पत्ति हो, जिससे माँगा जाय तथा जिससे डरा जाय; यथा—में गुरु जी से पढ़ता हूँ; तुम्हारा भाई मुझ से लजाता है; गंगा हिमालय से निकलती है; मैं तुमसे रोज़ रोज़ यही माँगता हूँ; मैं शेर से डरता हूँ।

६. संबन्ध कारक—संज्ञा के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो वह सम्बन्ध कारक कहलाता है। इसकी विभक्ति 'का' है पर 'का' का रूप वाच्य वस्तु के लिंग और वचन के अनुसार बदलता रहता है। जैसे—देवदत्त का लोटा, देवदत्त के लोटे, देवदत्त की पुस्तक, देवदत्त की पुस्तकें।

७. अधिकरण कारक—संज्ञा का वह रूप जिससे क्रिया के आधार का बोध होता है अधिकरण कारक कहलाता है। जैसे—गंगा में नहाइए, आसन पर विराजिए। इस कारक की विभक्तियाँ 'में' और 'पर' हैं।

अधिकरण तीन प्रकार के हैं—कालाधिकरण, भावाधिकरण और स्थानाधिकरण।

जिस काल में क्रिया का व्यापार होता है उसे कालाधिकरण कहते हैं; जैसे—१० मिनट में आता हूँ। गरमियों में दिन में नींद आती है।

क्रियाओं के भाव के प्रयोग में भावाधिकरण होता है। जैसे—वहाँ तक जाने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है?

जिस स्थान पर क्रिया होती है उसे स्थानाधिकरण कहते हैं। जैसे—पुस्तक मेज़ पर है। देवदत्त घर में है।

कालवाचक और स्थानवाचक अधिकरणों के साथ कभी कभी विभक्ति-चिह्न नहीं भी लगता। जैसे—कल रात क्या वर्षा हुई थी? अर्थात् कल रात में क्या वर्षा हुई थी! शाम तक मैं घर ही रहूँगा अर्थात् शाम तक मैं घर में ही रहूँगा।

८. सम्बोधन—संज्ञा के जिस रूप से किसी को चेतावनी या पुकारना सूचित होता है, उसे संबोधन कहते हैं। सम्बोधन कारक की कोई विभक्ति (प्रत्यय) नहीं। उसको प्रकट करने के लिये 'हे' 'अरे' आदि अव्यय शब्द से पूर्व लगाये जाते हैं। जैसे—हे प्रभो! आप हमें सुबुद्धि प्रदान करें। अरे छोकरे! तू कहाँ नौकरी करता है!

प्र० ४३—कारकों के अनुसार शब्दों में जो जो विकार होते हैं उनके नियम लिखो।

उ०—कारकों के अनुसार शब्दों में जो जो विकार होते हैं उनके नियम नीचे दिये जाते हैं—

एक वचन में—

१. पुँल्लिङ्ग आकारान्त संज्ञाओं के अन्तिम 'आ' को 'ए' हो जाता है; जैसे—लड़के ने, लड़के को। किन्तु जहाँ कर्ता और कर्म कारक में 'ने' और 'को' चिह्न नहीं लगते वहाँ 'आ' ही रहता है। कुछ आकारान्त पुँल्लिङ्ग संज्ञाएँ ऐसी भी हैं जिनके विभक्ति-रहित बहुवचन में अन्तिम 'आ' को 'ए' नहीं होता, उन संज्ञाओं के एकवचन में विभक्ति से पहले भी यह परिवर्तन नहीं होता; जैसे—राजा (ने, को....)। मुखिया आदि कुछ शब्दों के अन्तिम 'आ' को 'ए' विकल्प से होता है; जैसे—मुखिया, मुखिये (ने, को......)।

२. शेष सब पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, संज्ञाएँ अविकृत रहती हैं; जैसे—धन में, गौ का, मृत्यु से आदि।

बहुवचन में—

१. आकारान्त पुँल्लिङ्ग, समस्त अकारान्त (पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग दोनों) तथा 'इया' प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्तिम 'अ' और 'आ' को 'ओं' और संबोधन में 'ओ' हो जाता है; जैसे—बालक-बालकों (ने, को......) घोड़ा-घोड़ों (ने, को......) डिबिया-डिबियों (को, की)

२. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों, मामा, पिता, राजा, देवता, चन्द्रमा, सूरमा आदि शब्दों तथा उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, इनमें से कोई जिनके अन्त में हो ऐसे संपूर्ण पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में 'ओं' और सम्बोधन में 'ओ' जोड़ा जाता है। ऊकारान्त शब्दों का 'ऊ' ह्रस्व हो जाता है। शाला-शालाओं का राजा-राजाओं का. साधु-साधुओं को, बहू-बहुओं को।

मुखिया आदि शब्दों में विकल्प से अन्तिम 'आ' के स्थान में 'ओं' होता है अथवा शब्द के अन्त में 'ओं' जुड़ जाता है; जैसे—मुखियों को, मुखियाओं को।

३. इकारान्त तथा ईकारान्त संपूर्ण पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग सञ्ज्ञाओं के अन्त में 'यों' और सम्बोधन में 'यो' लगाया जाता है ईकारान्त शब्दों का अन्तिम 'ई' ह्रस्व हो जाता है; जैसे—पतियों को, नारियों को।

४. तत्सम संस्कृत संज्ञाओं के संबोधन के रूप संस्कृत के अनुसार भी प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे—प्रभो, राजन्, प्रिये, पुत्रि।

५. व्यञ्जनान्त संज्ञाओं के रूप भी अकारान्त संज्ञाओं के समान ही होते हैं; जैसे—विद्वान्-विद्वानों को।

प्र० ४४—अपनी हिन्दी में एक ऐसा वाक्य लिखो जिस में सब कारकों का समावेश हो जाय।

उ०—शान्ति, कल जब मैं अपने कमरे में बैठा हुआ, हिन्दी-भवन से तुम्हारे लिए आये हुए पुस्तकों के पासल को कैंची से उसकी सुतली काट कर खोल रहा था, तब तुमने मेरी जेब से कितने पैसे निकाले थे ?

सर्वनाम

प्र० ४५—सर्वनाम किसे कहते हैं। उनका प्रयोग किस लिए किया जाता है।

उ०—संज्ञाओं के स्थान पर उनके अर्थ को प्रकट करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे राम आज बीमार है, इसलिए आज उसने अपनी जगह मुझे काम पर भेजा है। इस वाक्य में 'उसने' और 'अपनी' शब्दों का प्रयोग संज्ञा 'राम ने' और 'राम की' के स्थान पर किया गया है। इसलिए ये सर्वनाम है। संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है। संज्ञा के बार बार आने से वाक्य भद्दा मालूम होता है। उपर्युक्त वाक्य में यदि सर्वनामों का प्रयोग न होता तो उसका यह रूप होता—राम आज बीमार है इसलिए आज राम ने राम की जगह मुझे काम पर भेजा है।

प्र० ४६—सर्वनामों के कितने भेद हैं ? सब भेदों के लक्षण और उदाहरण लिखो।

उ०—सर्वनामों के पाँच भेद हैं—१. पुरुषवाचक, जैसे मैं, तू, वह, आप। २. निश्चयवाचक, जैसे—यह, वह। ३. अनिश्चयवाचक, जैसे—कोई, कुछ। ४. सम्बन्धवाचक, जैसे—जो। ५. प्रश्नवाचक, जैसे—कौन, क्या।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले और जिसके विषय में कुछ कहा जाय उसका बोध कराते हैं उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

इसके तीन भेद हैं। (क) उत्तमपुरुष (ख) मध्यमपुरुष (ग) अन्यपुरुष।

बोलनेवाला या लिखनेवाला अपने लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है उसे उत्तमपुरुष कहते हैं, सुननेवाले या पढ़ने वाले के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है उसे मध्यम-पुरुष कहते हैं। जिसके विषय में कुछ कहा या लिखा जाय उसके लिए प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम शब्द अन्यपुरुष कहाते हैं; जैसे—'मैं तुझे उसकी हालत सुनाता हूँ'। इस वाक्य में 'मैं' उत्तमपुरुष 'तुझे' मध्यमपुरुष और 'उसकी' अन्यपुरुष है।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम—निश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे निश्चय पाया जाय। अन्य पुरुषवाचक यह, वह, ये, वे ही निश्चयवाचक सर्वनाम हैं। जैसे यह अच्छा है, वह नहीं। यहाँ यह से वस्तु के समीपवर्ती होने का और वह से दूरवर्ती होने का निश्चय पाया जाता है। निश्चयवाचक सर्वनाम को निर्देशवाचक या संकेतवाचक भी कहते हैं।

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम—अनिश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो। अनिश्चयवाचक सर्वनाम दो हैं—कोई और कुछ। 'कोई आया था और आप के लिए कुछ लाया था' इस वाक्य में 'कोई' और 'कुछ' से किसी खास वस्तु के बारे में निश्चय नहीं होता।

४. सम्बन्धवाचक सर्वनाम—सम्बन्धवाचक सर्वनाम वे हैं जो एक बात का दूसरी बात के साथ सम्बन्ध प्रकट करते हैं। जैसे—जो देता है, सो लेता है। इस वाक्य में 'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम है।

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम—प्रश्नवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे प्रश्न का बोध हो। जैसे—'कौन जानता है ?' 'क्या करते हो ?' इन वाक्यों में 'कौन' और 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

प्र० ४७—सर्वनामों के रूपान्तर के क्या कारण हैं ?

उ०—वचन और कारक के कारण सर्वनाम शब्दों के रूपान्तर होते हैं। संज्ञा शब्दों की भाँति लिंग के कारण इनका रूपान्तर नहीं होता।

प्र० ४८—सर्वनामों का सम्बोधन कारक होता है या नहीं, उत्तर देते हुए कारण भी लिखो।

उ०—सर्वनामों का सम्बोधन कारक नहीं होता, क्योंकि किसी को पुकारते समय हम उसका नाम या उपनाम लेकर ही पुकारते हैं, सर्वनाम द्वारा कभी किसी को नहीं पुकारते।

विशेषण

प्र० ४९—विशेषण किसे कहते हैं और विशेष्य किसे ? उदाहरण देकर समझाओ।

उ०—जिस पद से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट हो उसे विशेषण कहते हैं।

विशेषण द्वारा जिस संज्ञा की विशेषता प्रकट होती है

उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे—काली गाय, इस में 'काली' विशेषण है और 'गाय' विशेष्य।

प्र० ५०—विशेषण कितने प्रकार के होते हैं उनके नाम, लक्षण और उदाहरण लिखो।

उ०—विशेषण चार प्रकार के होते हैं। १. गुणवाचक, २. संख्यावाचक, ३. परिमाणवाचक, ४. सार्वनामिक या निर्देशक।

१. गुणवाचक—जिस विशेषण द्वारा संज्ञा या सर्वनाम में गुण, आकार, स्थान, समय तथा देश आदि की विशेषता पाई जाय उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—काला, पतला, गोल, जापानी आदि।

२. संख्यावाचक—जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम की गणना, क्रम, आवृत्ति आदि का बोध हो उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—चार लड़के, पाँचवाँ पृष्ठ, तीनों चोर, दोहरा कपड़ा।

३. परिमाणवाचक—जिस विशेषण से किसी वस्तु के माप, तोल का पता लगे उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे चार सेर दूध, दो गज़ कपड़ा।

४. सार्वनामिक या निर्देशक—जिस विशेषण से किसी की ओर निर्देश या संकेत पाया जाय उसे निर्देशक विशेषण कहते हैं। निर्देश 'यह' 'वह' आदि सर्वनाम शब्दों से ही किया जाता है, अतः निर्देशक विशेषणों को सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं। जैसे—'वह बन्दर बैठा है' 'यह पुस्तक पड़ी है' इन वाक्यों में 'यह' 'वह' शब्द निर्देशक विशेषण हैं।

प्र० ५१—संख्यावाचक विशेषणों के अवान्तर भेद उदाहरण सहित लिखो।

उ०—संख्यावाचक विशेषणों के तीन भेद हैं—१. निश्चित संख्यावाचक, २. अनिश्चित संख्यावाचक, ३. विभागवाचक या प्रत्येक बोधक।

१. निश्चित संख्यावाचक वे हैं जिनसे निश्चित संख्या का ज्ञान होता है। निश्चित संख्यावाचक के फिर चार भेद हैं—(क) गणनावाचक, जैसे—एक, दो, तीन आदि। (ख) क्रमवाचक, जैसे—पहला, दूसरा आदि। (ग) आवृत्तिवाचक जैसे—दुगना आदि। (घ) समुदायवाचक जैसे—तीनों चारों।

२. अनिश्चित संख्यावाचक वे हैं जिनसे निश्चित संख्या का ज्ञान नहीं होता। जैसे—सब (लोग), बहुत (फल), थोड़े (आदमी), कई (घोड़े)।

३. विभागवाचक या प्रत्येकबोधक वे हैं जिनसे कई वस्तुओं में से प्रत्येक का बोध होता है। जैसे प्रत्येक (आदमी), हर-एक (घर), हर (रोज़) आदि।

प्र० ५२—अनिश्चित परिमाणवाचक और अनिश्चित संख्यावाचक में क्या भेद है ?

उ०—सब, बहुत, थोड़ा, अधिक, कम, पूरा, सारा. कुछ आदि विशेषण अनिश्चित परिमाणवाचक बहुवचन भी हैं और अनिश्चित संख्यावाचक भी। जब ये तोल माप कर दी जाने वाली वस्तुओं के लिए आते हैं तो अनिश्चित परिमाणवाचक होते हैं और जब गिनने योग्य वस्तुओं के लिए आते हैं तो अनिश्चित संख्यावाचक होते हैं। इन की पहचान

के लिए सरल विधि यह है कि जब ये बहुवचन संज्ञा के साथ हो तब अनिश्चित संख्यावाचक होंगे और जब एकवचन संज्ञा के साथ हों तब अनिश्चित परिमाणवाचक।

प्र० ५३—सारा नगर, सारे नगर, दस फल, दस एक फल, इनमें क्या अन्तर है ?

उ०—सारा नगर—यहाँ 'सारा' अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण है, इसका मतलब है एक नगर के अन्तर्गत सारा इलाका। जैसे—गाँधीजी के आने पर सारा नगर झंडियों से सजाया गया। 'सारे नगर' में 'सारे' अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण हैं। जैसे—आजकल पंजाब के सारे नगर प्लेग के शिकार बने हुए हैं।

दस फल—यहाँ 'दस' निश्चित संख्यावाचक विशेषण है इसका अर्थ है पूरे दस फल। 'दस एक फल' में 'दस एक' अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण है। 'दस एक' का अर्थ है दस के लगभग।

प्र० ५४—दो, चार, नौ, सौ, से क्रमवाचक विशेषण बनाओ।

उ०—दो से दूसरा, चार से चौथा, नौ से नौवाँ, सौ से सौवाँ।

प्र० ५५—दो, तीन, चार इनसे आवृत्तिवाचक और समुदायवाचक विशेषण कैसे बनते हैं। उदाहरण सहित बताओ।

उ०—दो, तीन, चार—इनके आगे 'गुना' लगाने से आवृत्तिवाचक बनते हैं। जैसे—दुगना वा दूना, तिगुना, चौगुना।

दो के आगे 'नों' और तीन और चार के आगे 'ओं' लगाने से समुदायवाचक बनते हैं। जैसे—दोनों, तीनों, चारों।

प्र० ५६—विशेषणों के विकार की रीति बताओ।

उ०—विशेषण के वही लिंग, वचन और कारक होते हैं जो उसके विशेष्य के हों, पर कारक तथा वचन के कारण होनेवाले रूपान्तर विशेष्यों में ही होते हैं विशेषणों में नहीं। विशेष्यों के लिंग के कारण भी आकारान्त विशेषणों में ही कुछ परिवर्तन होता है, अन्य विशेषणों में नहीं। जैसे लाल कपड़ा, लाल कपड़े, लाल धोती, लाल धोतियाँ। पुँल्लिङ्ग विशेष्यों से पूर्व कर्ता कारक के एकवचन को छोड़कर शेष सब स्थानों में आकारान्त विशेषणों के अन्तिम 'आ' को 'ए' हो जाता है। जैसे—पीला वस्त्र, पीले वस्त्र, पीले वस्त्र से। आकारान्त विशेषण स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ ईकारान्त हो जाते हैं। जैसे—काली धोती, पतली साड़ियाँ।

प्र० ५६—संस्कृत विशेषणों के विकार का क्या नियम है।

उ०—हिन्दी में संस्कृत विशेषणों का रूप विशेष्य के लिंग के अनुसार बदल भी जाता है और नहीं भी। दोनों ही रूप हिन्दी में प्रचलित हैं, जैसे सुशील कन्या भी लिखा जाता है और सुशीला कन्या भी। पर कुछ संस्कृत शब्द ऐसे हैं जो स्त्रीलिंग विशेष्यों के साथ पुँलिंग रूप में नहीं लिखे जाते। जैसे—विदुषी कन्या, या श्रीमती महारानी, को 'विद्वान् कन्या' या 'श्रीमान् महारानी' नहीं लिखा जाता।

प्र० ५७—क्या विशेषण का भी विशेषण होता है। यदि होता तो उदाहरण देकर समझाओ।

उ०—विशेषण का भी विशेषण होता है। जैसे थोड़ी फटी धोती, बड़ा सुन्दर फूल।

प्र० ५८—गुणवाचक और परिमाणवाचक विशेषण कब क्रिया विशेषण होते हैं?

उ०—गुणवाचक और परिमाणवाचक विशेषण जब क्रिया की विशेषता दिखाते हैं तब क्रियाविशेषण हो जाते हैं। जैसे—बहुत खा गया, घी थोड़ा है।

प्र० ५९—निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाओ धन, मति, विष, गुण, सूर्य, कृपा, यश, ओज, प्रताप।

उ०—धन से धनी, मति से मतिमान्, विष से विषैला, सूर्य से सौर, कृपा से कृपालु, यश से यशस्वी, ओज से ओजस्वी, प्रताप से प्रतापी।

प्र० ६०—तुलना के अनुसार विशेषणों की कितनी अवस्थाएँ होती हैं और वे किस प्रकार प्रकट की जाती हैं उदाहरण दो।

उ०—तुलना के अनुसार विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं। १ मूल, २ उत्तर और ३ उत्तम।

१. मूलावस्था में तुलना नहीं होती। जैसे—मोहन बुद्धिमान् है, इसमें मोहन की किसी से तुलना नहीं की गई।

२. उत्तरावस्था में दो की तुलना करके एक की अधिकता या न्यूनता दिखाई जाती है। जैसे मोहन श्याम से बुद्धिमान् है, मोहन श्याम से कमज़ोर है। इन वाक्यों में क्रम से मोहन की श्याम से अधिकता और न्यूनता दिखाई गई है।

३. उत्तमावस्था में दो से अधिक वस्तुओं की तुलना करके

एक को उन सब से अधिक या न्यून बताया जाता है। जैसे—'विद्यार्थियों में मोहन सब से बुद्धिमान् है।' इसमें मोहन को सब से अधिक बताया गया है।

प्र० ६१—यह, वह इत्यादि शब्द कब सर्वनाम होते हैं और कब विशेषण; उदाहरण देकर समझाओ।

उ०—'यह' 'वह' इत्यादि शब्द जब अकेले संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं तब सर्वनाम होते हैं और जब किसी संज्ञा के साथ प्रयुक्त होते हैं तब निर्देशक या सार्वनामिक विशेषण होते हैं। जैसे—'मैं तो धनदेव के घर गया था पर वह वहाँ नहीं मिला' इस वाक्य में 'वह' सर्वनाम है क्योंकि धनदेव के स्थान पर आया है। 'वह धनदेव बैठा है' इस वाक्य में 'वह' सार्वनामिक विशेषण है क्योंकि वह संज्ञा (धनदेव) के साथ आया है।

क्रिया

प्र० ६२—धातु और क्रिया का लक्षण लिखकर क्रिया का सामान्य रूप कैसे बनता है, यह भी बताओ।

उ०—जिस पद से किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय उसे क्रिया कहते हैं। सब क्रियाएँ कुछ मूल शब्दों से बनी हैं जिन्हें धातु कहते हैं। धातु के आगे "ना" प्रत्यय जोड़ देने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है। जैसे "खा" से खाना, "लिख" से लिखना।

प्र० ६३—क्रिया के मुख्य भेद कितने हैं और कौन कौन से ?

उ०—क्रिया के मुख्य भेद दो हैं—सकर्मक और अकर्मक।

प्र० ६४—सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं और अकर्मक किसे ?

उ०—जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्ता को छोड़ कर्म पर पड़ता है वे सकर्मक होती हैं। जैसे—राम कपड़े धोता है—इस वाक्य में 'धोता है' क्रिया का व्यापार राम में रहता है—अर्थात् क्रिया राम करता है, पर इसका फल कपड़ों पर पड़ता है अर्थात् धोये वे जा रहे हैं। इसलिए 'धोता है' क्रिया सकर्मक है।

जिन क्रियाओं का व्यापार और फल—दोनों—एक (कर्ता) ही में रहते हैं वे अकर्मक होती हैं। जैसे—राम सोता है। यहाँ सोने का व्यापार और उसका फल दोनों राम (कर्ता) में ही रहते हैं। वही सोने वाला और वही सोने के फल को पाने वाला है। इसलिये "सोता है" क्रिया अकर्मक है—इसका कर्म कोई नहीं है।

प्र० ६५—अकर्मक क्रिया सकर्मक और सकर्मक क्रिया अकर्मक कब होती है ? उदाहरण देकर समझाओ।

उ०—जब अकर्मक क्रिया के साथ उसी धातु से बनी कोई भाववाचक संज्ञा जोड़ देते हैं तब वह सकर्मक हो जाती है। जैसे—वह अच्छी चाल चला, इस वाक्य में 'चलना' क्रिया से बनी भाववाचक संज्ञा 'चाल' को कर्म मान कर 'चला' अकर्मक क्रिया के साथ जोड़ दिया है। इसी प्रकार—वह खूब लड़ाई लड़ा, उसने बहुत रोना रोया, वह खूब चढ़ाई चढ़ा, आदि वाक्यों में अकर्मक क्रियाओं को सकर्मक बनाया गया है।

जब सकर्मक क्रिया द्वारा केवल व्यापार मात्र प्रकट किया जाता है, और कर्म की विवक्षा नहीं होती तब वह अकर्मक हो जाती है। जैसे—'वह सुनता है' इस वाक्य से जब केवल इतना ही अभिप्राय हो कि वह सुन सकता है, बहरा नहीं है। 'क्या सुनता है' यह बताना अभीष्ट न हो तब 'सुनना' क्रिया सकर्मक होते हुए भी अकर्मक हो जायगी। इसी प्रकार 'वह देखता है' 'वह बोलता है' आदि वाक्यों में भी 'देखता है' और 'बोलता है' क्रियाएँ सकर्मक होते हुए भी अकर्मक हैं।

प्र० ६६—द्विकर्मक क्रियाओं में गौण और मुख्य कर्म कैसे पहचाना जा सकता है? उदाहरण देकर समझाओ।

उ०—द्विकर्मक क्रियाओं के दो कर्मों में से कौन प्रधान है और कौन अप्रधान इसके जानने की रीति यह है कि द्विकर्मक क्रियाओं के साथ प्रश्न के लिए 'क्या' और 'किसको' लगाया जाय। जो 'क्या' के उत्तर में आये वह प्रधान या मुख्य कर्म होगा और जो 'किसको' के उत्तर में आये वह 'अप्रधानकर्म' होगा। जैसे—(प्रश्न) राम किसको क्या पढ़ाता है? (उत्तर) राम श्याम को व्याकरण पढ़ाता है। यहाँ 'क्या पढ़ाता है' के उत्तर में 'व्याकरण' आया है। इसलिए 'व्याकरण' प्रधानकर्म है। 'किसको पढ़ाता है', के उत्तर में आया है 'श्याम को' इसलिए 'श्याम को' अप्रधानकर्म है।

अन्य विधि—पदार्थवाचक शब्द मुख्य कर्म के द्योतक होते हैं और प्राणिवाचक गौणकर्म के। इस वाक्य में 'व्याकरण' पदार्थवाचक शब्द है, अतः मुख्य कर्म है और 'श्याम' प्राणिवाचक होने के कारण गौण कर्म है।

प्र० ६७—"वह वैद्य है" "वह वैद्य होता है" इन वाक्यों में अर्थ-भेद है या नहीं? यदि है तो क्या है?

उ०—'हो' धातु के दो अर्थ हैं—एक सत्ता, स्थिति या विद्यमानता और दूसरा विकार (उत्पन्न होना, बनना आदि)। 'वह वैद्य है' यहाँ सत्ता या पूर्णता पाई जाती है अर्थात् वैद्य हो चुका है। 'वह वैद्य होता है' में 'हो' धातु विकार (बनना) अर्थ में है अर्थात् वह वैद्य हुआ नहीं; लेकिन हो रहा है। व्याकरण की दृष्टि से यह भेद दिखाया जा सकता है पर प्रयोग में ऐसे वाक्य कभी देखने में नहीं आते। 'खेती होती है' आदि वाक्य तो प्रयुक्त होते हैं, पर 'वैद्य होता है 'धनी होता है' आदि वाक्यों का प्रयोग नहीं होता।

प्र० ६८—क्रियाएँ अपूर्ण कब होती हैं? उनकी पूर्ति कैसे होती है?

उ०—जब सकर्मक क्रियाओं का आशय कर्म के होने पर भी पूरा नहीं होता और उसकी पूर्ति के लिये किसी संज्ञा या विशेषण की आकांक्षा रहती है तब वे क्रियाएँ "अपूर्ण सकर्मक" कहलाती हैं। इसी प्रकार अकर्मक क्रियाएँ भी जब आशय पूरा न होने के कारण 'पूरक' की अपेक्षा रखती हैं तब वे 'अपूर्ण अकर्मक' कहलाती हैं। इनकी पूर्ति 'पूरक' से होती है।

प्र० ६९—पूरक किसे कहते हैं ? वह कहाँ 'कर्तृ-पूरक' और कहाँ 'कर्मपूरक' होता है ? उदाहरण से स्पष्ट करो।

उ०—अपूर्ण क्रियाओं के आशय की पूर्ति के लिए जिन जिन शब्दों (जो संज्ञा या विशेषण ही होते हैं) की आवश्यकता पड़ती है उन्हें 'पूरक' कहते हैं। जब ये वाक्य में कर्ता का विशेषण बन कर क्रिया की पूर्ति करते हैं तब 'कर्तृ पूरक' कहलाते हैं और जब कर्म के साथ उसका विशेषण बनकर क्रिया की पूर्ति करते हैं तब 'कर्मपूरक' कहलाते हैं जैसे—वह 'चालाक' बनता है—इस वाक्य में 'चालाक' पूरक 'वह' कर्ता का विशेषण बन कर क्रिया की पूर्ति करता है। इसलिए कर्तृपूरक है। 'मैंने उसे महात्मा समझा' इस वाक्य में महात्मा कर्म के साथ उसका विशेषण बन कर आया है इसलिये यह "कर्मपूरक" है।

प्र० ७०—संयुक्त क्रियाएँ किन किन अर्थों में आती हैं और किस किस रीति से बनाई जाती हैं ?

उ०—संयुक्त क्रियाएँ निम्नलिखित अर्थों में आती हैं—

आरम्भ, अवकाश, समाप्ति, शक्ति, आकस्मिकता, बलात्कार, पूर्णता, नित्यता, सातत्य, विवशता, स्थिरता आदि।

संयुक्त क्रियाओं के बनाने के कई प्रकार हैं।

(क) क्रिया के सामान्य रूप के 'ना' को 'ने' करके आगे 'लगना' और 'देना' या 'पाना' क्रियाओं के जोड़ने से क्रमशः 'आरम्भ बोधक' और 'अवकाश बोधक' संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—(आरम्भ बोधक) मेंह बरसने लगा। (अवकाश बोधक) मुझे जाने दो। नहीं, तुम जाने न पाओगे।

(ख) धातु के आगे 'चुकना' और 'सकना' क्रियाओं के जोड़ने

से क्रमशः 'समाप्ति बोधक' और 'शक्ति बोधक' संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—बादल बरस चुका। हम खा चुके। मैं चल सकता हूँ।

(ग) सामान्य भूत कालिक क्रिया के अन्तिम 'अ' को 'ए' कर के आगे 'देना' या 'डालना' क्रिया जोड़ने से 'तत्काल बोधक' संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—लिखे देता हूँ या लिखे डालता हूँ।

(घ) सामान्य भूतकालिक क्रिया के आगे 'करना' क्रिया जोड़ने से 'नित्यता बोधक' और 'चाहना' क्रिया लगाने से 'इच्छाबोधक' संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—बढ़ा करते हैं। वे गरीबों को अन्न दिया करते हैं। मैं यह काम किया चाहता हूँ। क्रिया के सामान्य भूतरूप के आगे 'चाहना' जोड़ने से वाक्य का तत्काल होना भी प्रकट होता है, जैसे—गाड़ी आया चाहती है।

(ङ) क्रिया के सामान्यरूप के आगे 'पड़ना' या 'होना' क्रिया जोड़ने से विवशता (बेबसी, मजबूरी) बोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—मुझे बहुत खर्च करना पड़ा। कर्मों का फल सबको भोगना पड़ता है। तुम्हें यह करना होगा।

(च) हेतुहेतुमद् भूतकालिक क्रिया के आगे और सामान्य-भूतकालिक क्रिया के अन्तिम स्वर को ए में बदल कर उसके आगे 'चलना' 'जाना' और 'रहना' लगाने से सातत्यबोधक संयुक्त क्रियाएं बनती हैं; जैसे—आगे बढ़ते (बढ़े) चलो, काम करते (किये) जाओ, बकते रहो या बकते जाओ।

प्र० ७१—पुनरुक्त या एकार्थ संयुक्त क्रिया किसे कहते हैं उदाहरण देकर बताओ।

उ०—कुछ संयुक्त क्रियाएँ एक ही अर्थ का बोध कराती हैं। (उनमें दूसरी क्रिया पहली क्रिया के अर्थ में विशेषता पैदा नहीं

करती) जैसे—समझना-बूझना, चलना-फिरना, लिखना-पढ़ना कूदना-फाँदना, बोलना-चालना आदि ।

प्र० ७२—'नामधातु' तथा नामधातु-क्रिया किसे कहते हैं उनके बनाने के कुछ नियम बनाओ। उदाहरण भी दो।

उ०—क्रिया को छोड़कर अन्य शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से जो धातु बनते हैं या जो नाम (संज्ञा या विशेषण) धातु के समान प्रयुक्त होते हैं उन्हें 'नामधातु' कहते हैं तथा नामधातुओं से जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं। प्रत्यय लगकर बननेवाले नामधातुओं में 'आ' 'या' और 'ला' प्रत्यय लगते हैं। शब्दों का पहला स्वर यदि दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। 'या' प्रत्यय परे होने पर शब्द के अन्तिम स्वर को 'इ' हो जाता है। जैसे—

शब्द	प्रत्यय	नामधातु	क्रिया का सामान्यरूप
लाज	आ	लजा	लजाना
हाथ	या	हथिया	हथियाना
झूठ	ला	झुठला	झुठलाना

प्र० ७३—प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं ?

उ०—प्रेरणार्थक क्रियाएँ वे हैं जिन से ज्ञात होता है कि कर्ता कार्य को अपने आप न करके किसी दूसरे को उसके करने की प्रेरणा करता है, अर्थात् कार्य को आप न करके किसी दूसरे से करवाता है। जैसे—मोहन मुनीम से चिट्ठी लिखवाता है, इस वाक्य में "लिखवाता है" क्रिया से यह जान पड़ता है कि मोहन स्वयं चिट्ठी न लिख कर मुनीम को चिट्ठी लिखने की प्रेरणा करता है, इसलिए लिखवाता है प्रेरणार्थक क्रिया है।

प्र० ७४—क्या कोई ऐसी क्रियाएँ भी हैं जिनसे प्रेरणार्थक क्रियाएँ न बनती हों ?

उ०—पाना, होना, आना, जाना, सकना, रुचना आदि कुछ ऐसी क्रियाएँ हैं जिन से प्रेरणार्थक क्रियाएँ नहीं बनतीं।

प्र० ७५—प्रेरणार्थक क्रियाओं की रचना के क्या नियम हैं ? प्रत्येक नियम के उदाहरण दो।

उ०—(१) मूलधातु के अन्त में 'आ' जोड़ने से पहली प्रेरणार्थक क्रिया और 'वा' जोड़ने से दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। तथा दो अक्षरों वाली धातुओं का पहला स्वर (ऐ और ओ को छोड़कर) यदि दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है—(अर्थात् आ, ई, ऊ, ए, ओ, के स्थान पर क्रमशः अ, इ, उ, इ, उ हो जाते हैं) जैसे—

मूलधातु	पहली प्रे० क्रि०	दूसरी प्रे० क्रि०
पढ़-(ना)	पढ़ाना	पढ़वाना
गिर-(ना)	गिराना	गिरवाना
घूम-(ना)	घुमाना	घुमवाना
फैल-(ना)	फैलाना	फैलवाना
औट-(ना)	औटाना	औटवाना

(२) कुछ एकाक्षर (एक व्यंजन और एक स्वर वाले) धातुओं के दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके अन्त में 'ला' जोड़ने से पहली प्रेरणार्थक क्रिया और 'लवा' जोड़ने से दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। तथा कुछ एकाक्षर धातुओं से केवल एक ही प्रेरणार्थक क्रिया बनती है, उनके अन्त में 'ला' की जगह 'वा' लगता है। जैसे—

मूलधातु	पहली प्रे० क्रि०	दूसरी प्रे० क्रि०
जी (ना)	जिलाना	जिलवाना
सो (ना)	सुलाना	सुलवाना
दे (ना)	दिलाना	दिलवाना
गा (ना)	गवाना	चू (ना) चुवाना
खे (ना)	खिवाना	बो (ना) बुवाना

(३) कुछ धातुओं के पहले प्रेरणार्थक रूप 'ला' और 'आ' लगाने से बनते हैं तथा दूसरे प्रेरणार्थक रूप 'वा' और 'लवा' लगाने से बनते हैं।

कह(ना)	कहाना, कहलाना	कहवाना, कहलवाना
देख(ना)	दिखाना, दिखलाना,	दिखवाना, दिखलवाना

(४) कुछ धातुओं की पहली प्रेरणार्थक क्रिया में और कुछ की दोनों प्रेरणार्थक क्रियाओं में विकल्प से अनियमित रूप बनते हैं। जैसे—

मूल धातु	पहली प्रे० क्रि०	दूसरी प्रे० क्रि०
चुभ (ना)	चुभाना, चुभोना	चुभवाना
बैठ (ना)	बि (बै) ठाना, बि (बै) ठालना	बि (बै) ठवाना,

प्र० ७६—अकर्मक से सकर्मक क्रियाएं किन नियमों से बनती हैं ?

(१) दो अक्षरों के धातुओं के पहले स्वर को और तीन अक्षरों के धातुओं के दूसरे स्वर को दीर्घ करने से अकर्मक धातु सकर्मक बन जाते हैं परन्तु कुछ दो अक्षरों के धातुओं में पहले 'इ' को 'ए' और 'उ' को 'ओ' हो जाता है। जैसे—

अकर्मक धातु	सकर्मक धातु
मर—(ना)	मार (ना)
पिस—(ना)	पीस (ना)
बिगड़—(ना)	बिगाड़ना
गिर—(ना)	गेर (ना) इत्यादि

(२) कुछ धातुओं के अन्तिम 'ट' को 'ड़' होकर पहले 'अ' को 'आ' और 'उ' या 'ऊ' को 'ओ' हो जाता है। जैसे—

अकर्मक धातु	सकर्मक धातु
फट—(ना)	फाड़ना
जुट—(ना)	जोड़ना
फूट—(ना)	फोड़ना इत्यादि

(३) कुछ धातुओं में नियम ही नहीं पाये जाते। जैसे—

अकर्मक धातु	सकर्मक धातु
सिल—(ना)	सीना
रह—(ना)	रखना
टूट—(ना)	तोड़ना इत्यादि

प्र० ७७—क्रियाओं के भिन्न भिन्न रूप किन किन कारणों से बनते हैं ?

उत्तर—क्रियाओं के भिन्न भिन्न रूप उनके काल, प्रकार, वाच्य, लिङ्ग, वचन, और पुरुष की भिन्नता कारण होते हैं।

प्र० ७८—क्रिया का काल किसे कहते हैं ? काल कितने हैं ? उनके नाम और लक्षण सोदाहरण लिखो।

उत्तर—क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने का समय जाना जाता है उसे 'काल' कहते हैं। 'काल' मुख्यतया तीन प्रकार का होता है—भूत, वर्तमान और भविष्यत्।

क्रिया के जिस रूप से भूत (बीते हुए) समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे 'भूतकाल' कहते हैं। जैसे—"उसने पुस्तक चुराई थी" "मैं वहाँ गया था" इत्यादि।

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं। जैसे—"वह पुस्तक चुराता है, मैं, वहाँ जाता हूँ" इत्यादि।

क्रिया के जिस रूप से भविष्यत् (आने वाले) समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे 'भविष्यत्काल' कहते हैं। जैसे—"वह पुस्तक चुराएगा, मैं वहाँ जाऊँगा" इत्यादि।

प्र० ७९—भूतकाल के समस्त भेद लक्षण और उदाहरण सहित लिखो।

उत्तर—भूतकाल के ६ भेद हैं—सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, सन्दिग्धभूत और हेतुहेतुमद्भूत।

सामान्यभूत—क्रिया के जिस रूप से साधारणतया बीते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाय, उसे समाप्त हुए थोड़ी देर हुई है या अधिक इत्यादि विशेषता का जिससे बोध न हो उसे सामान्य भूत कहते हैं। जैसे—धनदेव आया, श्याम ने रोटी खाई, इत्यादि।

आसन्नभूत—क्रिया के जिस रूप से क्रिया के व्यापार का समय आसन्न (निकट में) ही समाप्त हुआ समझा जाय उसे आसन्न भूत कहते हैं। जैसे—धनदेव आया है; श्याम ने रोटी खाई है।

पूर्णभूत—क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाय कि उस के व्यापार को समाप्त हुए बहुत काल बीत चुका है पूर्णभूत कहलाता है। जैसे—धनदेव आया था। श्याम ने मुरली बजाई थी।

अपूर्णभूत—क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाय कि क्रिया भत काल में हो रही थी परन्तु उस की समाप्ति का पता

न चले, अपूर्णभूत कहलाता है। जैसे—धनदेव आरहा था। श्याम मुरली बजा रहा था।

संदिग्ध भूत—क्रिया के जिस रूप से भूत काल तो पाया जाय किन्तु क्रिया के होने में सन्देह हो उसे संदिग्ध भूत कहते हैं। जैसे धनदेव आया होगा। आज नतीजा निकला होगा।

हेतुहेतुमद्भूत—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया का वह रूप है जिससे भूत काल में होने वाली क्रिया का न होना किसी दूसरी क्रिया के न होने पर अवलम्बित हो। यदि आप आ जाते तो काम अवश्य हो जाता।

प्र० ८०—वर्तमान काल किसे कहते हैं और वह कितने प्रकार का है? प्रत्येक भेद के लक्षण और उदाहरण लिखो।

उत्तर—क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल दो प्रकार का है—सामान्य वर्तमान और सन्दिग्ध वर्तमान।

(१) सामान्य वर्तमान वह है जिससे साधारण रूप से वर्तमान काल में क्रिया का होना पाया जाय। जैसे—धनदेव लिखता है, श्याम गाता है, कागज़ बनाया जाता है—इत्यादि

(२) सन्दिग्ध वर्तमान वह है जिस से वर्तमान काल में क्रिया के होने सन्देह पाया जाय। जैसे—राम आता होगा। लीला सोती होगी। श्याम पढ़ रहा होगा—इत्यादि।

प्र०८१—सामान्य भविष्यत् और सम्भाव्य भविष्यत् के लक्षण और उदाहरण लिखो।

उत्तर—सामान्य भविष्यत् वह है जिससे क्रिया का सामान्य

रूप से भविष्यत् (आने वाले) समय में होना पाया जाय। जैसे—शीला आवेगी। श्याम बुलाया जावेगा—इत्यदि।

सम्भाव्य भविष्यत् वह है जिससे भविष्यत् काल में होने वाली क्रिया के विषय में सम्भावना या इच्छा पाई जाय। जैसे—सम्भव है आज महाराज आवें। शायद वे आज लाहौर जायँ।

प्र० ८२—प्रकार किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ? प्रत्येक के लक्षण और उदाहरण लिखो।

क्रिया के कई रूपों से केवल काल का ही नहीं पर उस के विधान की रीति का भी ज्ञान होता है। कोई कार्य निश्चत रूप से हो रहा है, किसी के होने में संदेह है, किसी के होने की आज्ञा दी जा रही है—इन सब अर्थों को प्रकट करने के लिए भिन्न भिन्न रीति से क्रिया का विधान किया जाता है। इन्हीं रीतियों को 'प्रकार' कहते हैं।

प्रकार के तीन भेद हैं—साधारण या निश्चयार्थ, संभाव्य या संभावनार्थ और प्रवर्तनार्थक या विध्यर्थ।

साधारण—क्रिया के जिस रूप से साधारणतः क्रिया के होने का निर्देश पाया जाय उसे साधारण या निश्चयार्थ कहते हैं। जैसे—श्याम आता है। मोहन पत्र लिखेगा। मैं वहाँ गया था। सामान्य वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान, सामान्य भूत, आसन्नभूत पूर्णभूत अपूर्णभूत तथा सामान्य भविष्यत् की क्रियायें इस प्रकार के अन्तर्गत है।

संभाव्य—क्रिया का वह रूप जिस से संभावना (अनुमान इच्छा, कर्तव्य या संदेह) पाई जाय 'संभाव्य' या 'सम्भावनार्थ कहलाता है। जैसे—काले बादल घिर रहे हैं, कदाचित् पानी बरसे। शिष्य को चाहिये कि गुरु की सेवा करे। कुमारी अवस्था

में पढ़ लेती तो आज यह दुर्दिन क्यों देखने पड़ते। संदिग्धभूत, संदिग्धवर्तमान तथा संभाव्य भविष्यत् की क्रियायें इस प्रकार के अन्तर्गत है।

प्रवर्तनार्थक या विध्यर्थ--उसे कहते हैं जिससे किसी को किसी काम में प्रवृत्त करना या लगाना पाया जाय। आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश, प्रश्न आदि उसी के अन्तर्गत हैं। जैसे—जल्दी जाओ। पानी लाओ। आप कहें तो मैं जाऊँ?

इसके दो भेद हैं—(१) सामान्य विधि (२) परोक्ष विधि।

सामान्य विधिक्रिया से आज्ञा, प्रार्थना आदि का सामान्य रूप से बोध होता है। जैसे—घर जाओ। भगवन्! विराजिए।

परोक्षविधिक्रिया से आज्ञा आदि का पालन भविष्यत् में (आगे को) होता है। जैसे—कुशलपूर्वक रहना। तुम्हें पढ़ने में मन लगाना चाहिए—इत्यादि। प्रायः सामान्य विधि की क्रिया वर्तमान काल में और परोक्ष विधि की भविष्यत् काल में होती है।

प्र०८३—वाच्य किसे कहते हैं? और उसके कितने भेद हैं? प्रत्येक के लक्षण और उदाहरण लिखो।

उत्तर—क्रिया के जिस रूपान्तर से जाना यह जाय कि वाक्य में में क्रिया द्वारा किये गये विधान (कही गई बात) का विषय कर्ता है, कर्म है या भाव (धातु का अर्थ) है उसे 'वाच्य' कहते हैं।

वाच्य तीन होते हैं— कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा और प्रधान सम्बन्ध कर्ता से होता है (अर्थात् क्रिया का वाच्य—प्रधान उद्देश्य—कर्ता होता है) जैसे—'राम चिट्ठी लिखता है। इस वाक्य में 'लिखता है' क्रिया का प्रधान उद्देश्य 'राम' कर्ता है,

'राम लिखता है' यह मुख्य वाक्य है इसलिए यह वाक्य कर्तृवाच्य है। कर्तृवाच्य में क्रिया के लिङ्ग और वचन मुख्यतया कर्ता के अनुसार होते हैं।

कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है और क्रिया का सम्बन्ध सीधा कर्म से होता है। क्रिया के लिङ्ग और वचन भी कर्म के अनुसार ही होते हैं। जैसे—'राम से चिट्ठी लिखी जाती है।' इस वाक्य में 'लिखी जाती है' क्रिया का मुख्य सम्बन्ध 'चिट्ठी' कर्म से है, इसलिए यह वाक्य कर्मवाच्य हुआ।

भाववाच्य में भाव (धातु के अर्थ) की ही प्रधानता होती कर्ता या कर्म की नहीं, यह अकर्मक धातुओं में ही होता है। इसमें क्रिया सदा एक वचन पुल्लिंग और अन्यपुरुष में रहती है। इसका अधिक प्रयोग निषेधार्थक वाक्यों में है। जैसे—चला नहीं जाता। बैठा नहीं जाता।

प्र० ८४—कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य और भाववाच्य कैसे बनाया जाता है?

कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों तरह की क्रियाओं का प्रयोग होता है। कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल के रूप में लाकर उसके साथ 'काल' 'पुरुष' 'वचन' और 'लिंग' के अनुसार 'जाना' क्रिया के रूप जोड़ने से सकर्मक क्रिया से कर्मवाच्य क्रिया बन जाती है और अकर्मक क्रिया से भाव वाच्य। जैसे—

सकर्मक कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
धनदेव वैद्यक पढ़ेगा	धनदेव से वैद्यक पढ़ी जायगी
श्यामलाल ने पत्र लिखा	श्यामलाल से पत्र लिखा गया
अकर्मक कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
शकुन्तला नहीं उठती	शकुन्तला से उठा नहीं जाता
गाय नहीं चलती	गाय से चला नहीं जाता

प्र० ८५—क्रिया का प्रयोग कितने प्रकार से है ? स्पष्ट रूप से समझाओ।

क्रिया के पुरुष लिंग और वचन कहीं तो कर्ता के अनुसार होते हैं, वही कर्म के अनुसार और कहीं इन दोनों में से किसी के अनुसार भो नहीं होते। इस तरह क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है।

(१) कर्तरि प्रयोग, (२) कर्मणि प्रयोग, (३) भावे प्रयोग।

(१) कर्तरि प्रयोग—जिसमें क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं क्रिया के उस प्रयोग को कर्तरि प्रयोग कहते हैं। इस में कर्ता सदा विभक्तिरहित होता है। जैसे—देवदत्त चिट्ठी लिखता है। शकुन्तला फूल तोड़ती है।

(२) कर्मणि प्रयोग—जिस में क्रिया के पुरुष लिङ्ग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं क्रिया के उस प्रयोग को 'कर्मणि प्रयोग' कहते हैं। इस में कर्ता विभक्ति (ने या से) के साथ और कर्म विभक्ति (को) के बिना होता है। जैसे—राम ने पुस्तक पढ़ी। शकुन्तला ने फूल तोड़ा। मुझ से चिट्ठी नहीं लिखी जाती।

(३) भावे प्रयोग—जिस में क्रिया के पुरुष, लिङ्ग, वचन, कर्ता या कर्म के आश्रित न हों किन्तु क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुलिङ्ग, एक वचन में रहे क्रिया के उस प्रयोग को भावे प्रयोग कहते हैं।

प्र० ८६—भावे प्रयोग में कौन कौन क्रियाएँ आती हैं ?

उत्तर—कर्तृवाच्य की सकर्मक क्रियायें, जब उनके कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति सहित हों और अकर्मक क्रियायें, जब उनका कर्ता विभक्ति सहित हो तथा भाववाच्य की सम्पूर्ण क्रियायें 'भावे प्रयोग' में आती हैं।

प्र० ८७—क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन कब कर्ता के अनुसार और कब कर्म के अनुसार होते हैं और कब उन दोनों में से किसी के अनुसार भी नहीं होते?

उत्तर—जब कर्ता विभक्ति-रहित हो या कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति-रहित हों तब क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं। जब कर्ता विभक्ति-सहित हो और कर्म विभक्ति रहित हो तब क्रिया के पुरुष, लिङ्ग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

जब कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति-सहित हों या अकर्मक क्रियाओं में कर्ता विभक्ति-सहित हो तो क्रिया के पुरुष लिंग वचन किसी के अनुसार नहीं होते; उस हालत में क्रिया सदा पुँल्लिग, अन्य पुरुष, एक-वचन में होती है।

प्र०८८—कर्तृवाच्य क्रिया के कर्मणि प्रयोग के और कर्मवाच्य क्रिया के भावे प्रयोग के दो-दो उदाहरण दो।

कर्तृवाच्य क्रिया के कर्मणिप्रयोग	कर्मवाच्य क्रिया के भावे प्रयोग
धनदेव ने पुस्तक पढ़ी	नरेन्द्र को बुलाया गया
श्यामलाल ने आम चूसे	सावित्री को पढ़ाया जायगा

प्र० ८९—"यदि मुझ से अन्न खाया जाय तो शरीर में बल आए; मोहन अच्छा नहीं गाता; परीक्षक परीक्षा ले रहा था, मुझसे उठा नहीं जायगा, तुझसे कुछ कहा जारहा था, यदि आप मुझे फिर ऐसा करते देखें तो बेशक मारें" इन वाक्यों में कौन क्रिया किस काल की है यह बताकर वाच्य परिवर्तन करो।

उत्तर—पहले वाक्य में 'खाया जाय' और 'आए' सम्भाव्य भविष्यत् काल की क्रियाएँ हैं और ये कर्म-वाच्य हैं। कर्तृवाच्य में यह वाक्य इस प्रकार होगा—यदि मैं अन्न खाऊँ तो शरीर में बल आए।

दूसरे वाक्य में 'गाता' क्रिया सामान्य वर्तमान काल की है और कर्तृवाच्य है। इसका भाववाच्य होगा— मोहन से अच्छा नहीं गाया जाता।

तीसरे वाक्य में 'ले रहा था' क्रिया अपूर्णभूत काल की है और कर्तृवाच्य है। कर्मवाच्य में इसका रूप होगा—परीक्षक से परीक्षा ली जा रही थी।

चौथे वाक्य में 'उठा नहीं जायगा' क्रिया सामान्य भविष्यत् काल की है और भाववाच्य है। कर्तृवाच्य में इसका रूप होगा—मैं उठ नहीं सकूँगा।

पांचवें वाक्य में 'कहा जा रहा था' अपूर्णभूत काल की क्रिया है और कर्मवाच्य है। कर्तृवाच्य में इसका रूप होगा—तू कुछ कह रहा था।

छठे वाक्य में "देखें... ..मारें" सम्भाव्य भविष्यत् काल की क्रियाएँ हैं और ये कर्तृवाच्य हैं। कर्मवाच्य में यह वाक्य इस प्रकार होगा—यदि मैं फिर ऐसा करते आप से देखा जाऊँ तो बेशक मारा जाऊँ।

प्र० ६०—पूर्वकालिक और तात्कालिक क्रिया क्या होती है बताओ ?

उ०—जब कर्ता एक क्रिया समाप्त करके उसी समय दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है और पहली क्रिया पर वाक्य

समाप्त नहीं होता तो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। यह धातु के अन्त में 'कर' 'के' अथवा 'करके' लगाने से बनती है। जैसे—खाना खाकर स्कूल जाऊँगा।

तात्कालिकक्रिया भी पूर्वकालिक की तरह ही है। पर तात्कालिक क्रिया से पता लगता है कि कर्ता एक क्रिया को समाप्त करने के साथ ही दूसरी में प्रवृत्त हो गया है। यह धातु के अन्त में 'ते' प्रत्यय लगाकर उसके आगे 'ही' जोड़ने से बनती है। जैसे—खाना खाते ही स्कूल जाऊँगा।

प्र० ६१—क्रिया-विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? हर एक के चार चार उदाहरण लिखो।

उत्तर—क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द को क्रिया-विशेषण कहते हैं। अर्थ के अनुसार क्रिया-विशेषण मुख्यत: चार प्रकार के हैं—काल-वाचक, स्थान-वाचक, परिणाम-वाचक और रीति-वाचक।

(क) जिस क्रिया-विशेषण से समय अवधि तथा किसी क्रिया के बार-बार होने का ज्ञान हो उसे काल वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—वह अभी आया है। मोहन कब तक रहेगा? शकुन्तला प्रति दिन यहाँ आती है। आजकल गर्मी बहुत पड़ती है।

(ख) जो विशेषण क्रिया के स्थान और दिशा आदि का ज्ञान कराए वह स्थान-वाचक क्रिया-विशेषण होता है। जैसे—मैं ऊपर जाता हूँ। बाहर मत निकलो। चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है। किधर जा रहे हो?

(ग) क्रिया के परिमाण बताने वाले विशेषण परिमाण-वाचक क्रियाविशेषण कहाते हैं। जैसे—मैं थोड़ा थोड़ा प्रतिदिन लिखता हूँ। विमला पढ़ने की ज़रा भी परवाह नहीं करती। सुरेन्द्र इतना मूर्ख नहीं है। वह बहुत कम खाता है।

(घ) रीतिवाचक—जो विशेषण क्रिया करने की रीति बताते हैं वे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहाते हैं। जैसे—धीरे धीरे चलो। शान्ति से पढ़ो। आप ठीक कहते हैं। तुमने यह कागज़ क्यों फाड़ा। ये अनेक प्रकार के हैं। जिनका समावेश दूसरे वर्गों में नहीं हो सकता उन सब को इसी के अन्तर्गत समझना चाहिये।

प्र० ६२—क्रिया-विशेषण कैसे बनते हैं? इनके कुछ नियम उदाहरण सहित लिखो।

उत्तर—कुछ क्रिया विशेषण ऐसे हैं जिन्हें मूल क्रिया-विशेषण कहा जा सकता है—वे किसी अन्य शब्द के योग से नहीं बनते। जैसे—दूर, अचानक, फिर, नहीं आदि। पर बहुत से क्रियाविशेषण दूसरे शब्दों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं। उन्हें यौगिक क्रिया-विशेषण कहते हैं। वे नीचे लिखे शब्द-भेदों से बनते हैं—

संज्ञा से—मन से काम करो। रात को पढ़ूँगा। आज मैं दिनभर घूमा—इत्यादि वाक्यों में 'मन, रात, दिन' ये संज्ञाएँ हैं और क्रमशः 'से' 'को' 'भी' के योग से क्रियाविशेषण हो गई हैं।

सर्वनाम से—किधर जाते हो? इधर आओ। फिर कब जाओगे?—इत्यादि वाक्यों में 'किधर, इधर, कब' शब्द सर्वनाम होते हुए भी क्रियाविशेषण हैं।

विशेषण से—घोड़ा अच्छा दौड़ता है। 'अच्छा' शब्द विशेषण होते हुए भी यहाँ क्रिया-विशेषण है। इसी प्रकार क्रिया से, अव्ययों के मेल से, शब्दों की द्विरुक्ति से भिन्न-भिन्न शब्दों के

मेल से, अनुकरण-वाचक शब्दों की द्विरुक्ति (दो बार कहने) से भी क्रियाविशेषण बन जाते हैं। जैसे—यहाँ तक, साफ़-साफ़ रातदिन, सरसर।

प्र० ६३—संबन्ध-बोधक अव्यय किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के हैं ? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दो।

उत्तर— जो अव्यय संज्ञा अथवा सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध सूचित करते हैं, उन्हें सम्बन्ध-बोधक अव्यय कहा जाता है। ये अव्यय तीन प्रकार के हैं—

(क) एक वे हैं जिनका प्रयोग नित्य विभक्तियों के बाद होता है। जैसे—'मैदान के समीप हमारा घर है' 'मनोहर घर की ओर गया है' इन वाक्यों में 'समीप' तथा 'ओर' सम्बन्ध-बोधक अव्यय हैं और इनका प्रयोग 'के' और 'की' विभक्तियों के बाद हुआ है।

(ख) कुछ अव्यय ऐसे हैं जिनके पहले विभक्ति-रहित संज्ञा ही आती है। जैसे—भरत सरीखा भाई बड़ी कठिनता से मिलता है। यहाँ सरीखा सम्बन्ध-बोधक अव्यय है पर उससे पहले विभक्ति कोई नहीं।

(ग) कुछ अव्यय ऐसे हैं जिनके पहले विभक्ति सहित तथा विभक्तिरहित दोनों तरह की संज्ञाएँ आती हैं। जैसे—गोपाल द्वारा (गोपाल के द्वारा) मुझे यह कार्य मिला। यहां पर 'द्वारा' यह सम्बन्ध-सूचक अव्यय है।

प्र० ६४—योजक किसे कहते हैं ? इसके मुख्य कितने भेद हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।

उत्तर—दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को मिलाने वाले अव्ययों को योजक कहते हैं। योजक अव्ययों के मुख्य तीन भेद हैं—संयोजक, विकल्पबोधक और भेदबोधक।

संयोजक—अनेक अर्थों का संयोग (मेल संग्रह या एकता) प्रकट करते हैं। जैसे—और, तथा, एवं आदि। ये, कृष्ण और मैं वहाँ गये थे।

विकल्प बोधक—अनेक अर्थों में विकल्प प्रकट करते हुए उन्हें मिलाते हैं। जैसे—या, वा, अथवा, चाहे। ? यह पुस्तक राम को दूँ वा श्याम को। नौकर को भेज देना चाहे आप चले जाना।

भेद बोधक—अनेक अर्थों में भेद प्रकट करते हुए उन्हें मिलाते हैं। जैसे—पर, परन्तु, किंतु, वरन, बल्कि, नकि आदि। रमेश दरिद्र है पर है नेक। इस का मालिक राम है नकि श्याम।

कई एक योजकों के मुख्य दो ही भेद कहते हैं, संयोजक और विभाजक। वे विकल्प बोधक और भेद बोधक को अलग अलग नहीं करते बल्कि एक विभाजक ही मानते हैं।

प्र० ६५—निम्नलिखित योजकों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो। 'या' 'ताकि' 'इसलिए' 'क्योंकि' 'अर्थात्'।

उत्तर—या—चिट्ठी मोहन को दूँ या सोहन को।

ताकि—मुझे अब चलना चाहिए ताकि ठीक समय पर पहुँच जाऊँ।

इसलिए—वे मेरा कहना नहीं मानेंगे, इसलिए तुम ही उनके पास जाओ।

क्योंकि—मैं वहाँ नहीं जाना चाहता क्योंकि वह मुझ से लड़ा हुआ है।

अर्थात्—स्वास्थ्य सुधारना जीवन का सब से मुख्य अंग है अर्थात् शरीर की रक्षा करना मनुष्य का प्रधान कर्तव्य है।

प्र०९६—द्योतक किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिन शब्दों से बोलने वाले के विस्मय, हर्ष, शोक, लज्जा ग्लानि आदि मनोभाव प्रकट होते हैं, उन्हें द्योतक या विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। ये कई प्रकार के होते हैं। जैसे—

हर्षबोधक—अहा, आज तो यहाँ खूब मिठाई मिलेगी।

शोकादिबोधक—हा ईश्वर, मेरे भाग में इतना सुख भी न बदा था।

तिरस्कार बोधक—हट ! नारकीय कुत्ते मेरे सामने न आ।

स्वीकार-बोधक—हाँ, मेरा भी यही मत है।

आश्चर्यबोधक—ऐं ! तुम भी ऐसा काम कहते हो !

आशीर्वादबोधक—जीते रहो ! बढ़ते रहो ! इत्यादि

प्र० ९७—तीन ऐसे वाक्य बताओ जिन से हर्ष, घृणा और आश्चर्य के भाव प्रकट हों।

हर्षबोधक—अहा ! कैसा सुन्दर दृश्य है !

घृणा—छिः ! ऐसा काम करते तुम्हें लज्जा न आई।

आश्चर्य—क्या ! ऐसी बात है ?

प्र० ९८—उपसर्ग और प्रत्यय में क्या भेद है ?

उत्तर—उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के आदि में आकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या उसके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं किन्तु प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो शब्दों के अन्त में जोड़े जाते हैं। यही इन दोनों में भेद है। जैसे—कुपूत में 'कु' उपसर्ग है और धनवान' में 'वान' प्रत्यय है।

प्र० ९९—उदाहरण देकर स्पष्ट करो कि उपसर्ग के लगने से शब्दों के अर्थ में अन्तर पड़ जाता है।

उत्तर—'कुपूत' इस शब्द में 'कु' उपसर्ग है। उपसर्ग लगाने से पहले 'पूत' शब्द का अर्थ है पुत्र। किन्तु 'कु' उपसर्ग लगने के बाद उसका अर्थ हो गया 'बुरा पुत्र' और यदि 'कु' की जगह 'सु' उपसर्ग लगा दिया जाता तो 'सुपुत्र' का अर्थ हो जाता अच्छा पुत्र। इससे स्पष्ट है कि उपसर्गों से शब्दों के अर्थों में भिन्नता आजाती है और कहीं-कहीं तो अर्थ बिल्कुल ही बदल जाता है। जैसे—जय शब्द का अर्थ है 'जीत', पर यदि इससे पहले 'परा' जोड़ दिया जाय तो 'पराजय' का अर्थ हो जाता है 'हार'।

प्र० १००—कृत्प्रत्यय और तद्धित प्रत्ययों में क्या भेद है?

उत्तर—धातुओं के अन्त में जिन प्रत्ययों के लगाने से क्रिया को छोड़ कर अन्य शब्द बनते हैं उन्हें कृत्प्रत्यय कहते हैं और धातुओं को छोड़ दूसरे शब्दों के अन्त में जिन प्रत्ययों के लगाने से अन्य शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। सारांश यह है कि—कृत् प्रत्यय धातुओं के अन्त में लगते हैं पर तद्धित प्रत्यय धातुओं को छोड़ शेष शब्दों के अन्त में।

कृत्प्रत्यय—जैसे—करने वाला, राखनहार, सृजनहार। तद्धितप्रत्यय—जैसे—लकड़हारा, कारीगर इत्यादि।

प्र० १०१—कृत्प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक के लक्षण और उदाहरण दो।

उत्तर—कृत्प्रत्यय पाँच प्रकार के हैं। कर्तृवाचक, कर्मवाचक करणवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक।

(१) कर्तृवाचक—कर्तृवाचक प्रत्यय वे हैं जिनके लगाने से बनी हुई संज्ञाओं से क्रिया (व्यापार) के करने वाले का बोध होता है। जैसे—वाला, हारा, सार आदि, इनसे करनेवाला राखनहार मिलनसार आदि शब्द बनते हैं।

(२) कर्मवाचक—कर्मवाचक प्रत्यय वे हैं जिनके लगाने से बनी हुई संज्ञाओं से कर्म का बोध हो। जैसे—ना, नी, औना। धातु के अन्त में इन प्रत्ययों के लगाने से कर्मवाचक कृदन्त बनते हैं। जैसे—ओढ़ना, सूँघनी, बिछौना आदि।

(३) करणवाचक—करणवाचक प्रत्यथ वे हैं जिनके लगाने से बनी हुई संज्ञाओं से करण (क्रिया के साधन) का बोध हो। जैसे—आ, ई, ऊ, न, ना, नी, आनी इत्यादि। धातु के आगे इन प्रत्ययों के लगाने से करणवाचक प्रत्यय बनते हैं। जैसे—झूला, झाड़ू, बेलन, बेलना, धौंकनी, मथानी आदि।

(४) भाववाचक—भाववाचक प्रत्यय वे हैं जिनके लगाने से बनी हुई संज्ञाओं से भाव (क्रिया के व्यापार) का बोध हो। जैसे—आव, आई, आन, आप, आवट, आहट, न, ई, वा आदि। धातु के आगे इन प्रत्ययों के लगाने से भाववाचक कृदन्त बनते हैं। जैसे—चढ़ाव, लड़ाई, उड़ान, मिलाप, दिखावट, घबराहट, लगन, हँसी, बुलावा आदि।

(५) क्रियाद्योतक—क्रियाद्योतक प्रत्यय वे हैं जिनसे क्रियाओं के समान ही भूत या वर्तमानकाल के वाचक विशेषण या अव्यय बनते हैं। हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के प्रथम पुरुष एकवचन के बाद 'हुआ' लगाने से वर्तमानकाल का विशेषण और सामान्यभूत क्रिया के प्रथम पुरुष एकवचन के आगे 'हुआ' लगाने से भूतकाल का विशेषण बनता है। कभी कभी 'हुआ' नहीं भी लगता। जैसे—(वर्तमानकाल) भागता हुआ घोड़ा, सोता हुआ मनुष्य, (भूतकाल) गया वक्त या गया हुआ वक्त। मरा मनुष्य या मरा हुआ मनुष्य आदि।

प्र० १०२—तद्धित प्रत्यय मुख्यतया कितनी तरह के हैं? संक्षेप से उदाहरणसहित लिखो।

उत्तर—वैसे तो तद्धित प्रत्ययों की संख्या बहुत बड़ी है पर फिर भी मुख्यतया ये आठ श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। (१) कर्तृवाचक, (२) भाववाचक, (३) सम्बन्धवाचक, (४) लघुतावाचक, (५) पूर्णवाचक, (६) सादृश्यवाचक, (७) गुणवाचक, (८) स्थानवाचक।

(१) कर्तृवाचक प्रत्यय—ये करनेवाला, बनाने वाला आदि अर्थों में आते हैं; जैसे—आर, इया, ई, उआ, एरा, वाला, हारा इत्यादि—इनसे क्रमशः सुनार, आढ़तिया, भण्डारी, मछुआ, सँपेरा, टोपीवाला, लकड़हारा आदि शब्द बनते हैं।

(२) भाववाचक प्रत्यय—वा, आई, आपा, आस, आयत, इख, ई, ड़ा, त, नी, पन, हट, गी इत्यादि। इनसे बुलावा, बुराई, बुढ़ापा, मिठास, बहुतायत, कालिख, गर्मी, दुखड़ा, रंगत, चाँदनी, लड़कपन, चिकनाहट, ज़िन्दगी, आदि शब्द बनते हैं। इनके अतिरिक्त संस्कृत के भाववाचक तद्धित शब्द भी हिन्दी में प्रचलित हैं। जैसे—शैशव, गरिमा, लघिमा, महिमा, आलस्य, माधुर्य आदि।

(३) सम्बन्धवाचक प्रत्यय—आल, जा, एरा आदि। जैसे—ससुराल, ननिहाल, भतीजा, भानजा, ममेरा, फुफेरा, आदि। संस्कृत के अपत्यवाचक कौन्तेय, माद्रेय, मानव, दानव आदि तद्धित प्रत्यय शब्द भी इसी श्रेणी के अन्तर्गत समझने चाहिए।

(४) लघुतावाचक प्रत्यय—आ, इया, री, टी, ड़ी आदि। इनसे बबुआ, खटिया, कोठरी, लंगोटी, पगड़ी आदि शब्द बनते हैं।

(५) पूर्णवाचक प्रत्यय—ला, रा, था, वाँ, ठा आदि। इनसे—पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा आदि शब्द बनते हैं।

(६) सादृश्यवाचक प्रत्यय—सा, हरा आदि। इनसे—काला-सा, सुनहरा आदि शब्द बनते हैं।

(७) गुणवाचक प्रत्यय—आ, इत, ईय, ई, ईला, ऐला, लु, वन्त वान् आदि हैं। इनसे—भूखा, आनन्दित, अनुकरणीय, धनी, रँगीला, विषैला, दयालु, कुलवन्त, रूपवान् आदि शब्द बनते हैं।

(८)स्थानवाचक प्रत्यय—ई,इया,वाला,वाल,इत्यादि। इनसे—पंजाबी, अमृतसरिया, बम्बईवाला, गयावाल आदि शब्द बनते हैं।

प्र० १०३ नीचे लिखे शब्दों में किस अर्थ में कौन सा प्रत्यय है।

खिलाड़ी, हँसी, तेली, लम्बाई, कड़वाहट, लड़कपन, लुटिया, खटिया, दूसरा, गवैया, झगड़ालू, झाड़ू, रंगत, वक्तृता, लाघव, पहला, ताज़गी, भलाई, कमाऊ, गाड़ीवान।

खिलाड़ी—कर्तृवाचक (करने वाला अर्थ में), कृत् "आड़ी" प्रत्यय।

हँसी—भाववाचक, कृत् "ई" प्रत्यय।

तेली—कर्तृवाचक या व्यापार वाचक,तद्धित "ई" प्रत्यय।

लम्बाई—भाववाचक, तद्धित,"आई" प्रत्यय।

कड़वाहट—भाववाचक, तद्धित, 'हट" प्रत्यय।

लड़कपन—भाववाचक, तद्धित "पन" प्रत्यय।

लुटिया, खटिया—ऊनता (लघुता) वाचक, तद्धित "इया" प्रत्यय।

दूसरा—पूर्ण वाचक, तद्धित "रा" प्रत्यय।

गवैया—कर्तृवाचक, कृत् "वैया" प्रत्यय।

झगड़ालू—कर्तृवाचक, कृत् "आलू" प्रत्यय।

झाड़ू—करणवाचक, कृत् "ऊ" प्रत्यय।

रंगत—भाववाचक, तद्धित "त" प्रत्यय।

वक्तृता—भाववाचक, तद्धित "ता" प्रत्यय। (यह संस्कृत का है)।

लाघव—भाववाचक, तद्धित "अ" प्रत्यय (यह भी संस्कृत का है)

पहला—पूरणवाचक, तद्धित "ला" प्रत्यय।

ताजगी—भाववाचक, उर्दू का तद्धित "गी" प्रत्यय।

गमगीन—वाला अर्थ में, उर्दू का तद्धित 'गीन' प्रत्यय।

भलाई—भाववाचक, तद्धित 'आई' प्रत्यय।

कमाऊ—कर्तृवाचक,कृत् "आऊ" प्रत्यय।

गाड़ीवान—वाला अर्थ में, उर्दू का तद्धित "वान" प्रत्यय

प्र० १०४ समास किसे कहते हैं और विग्रह किसे ?

उत्तर—परस्परिक संबन्ध बतलाने वाले शब्दों अथवा विभक्ति प्रत्ययों के लोप हो जाने पर जब दो या दो से अधिक शब्द मिल कर एक नया शब्द बनाते हैं तब उस मेल को समास कहते हैं। और मिले हुए पदों को समस्त पद (समास किया हुआ) कहते हैं। जैसे—राजा का पुत्र = राजपुत्र ॥

समस्त पद जिन शब्दों के मेल से बनते हैं वे उसके खण्ड कहाते हैं। समस्त पद क खण्ड करके उसके खण्डों का परस्पर सम्बन्ध दिखाने की रीति को विग्रह (अलग करना) कहते हैं। जैसे—राजपुत्र, इस समस्त पद का. विग्रह होगा 'राजा का पुत्र।'

प्र० १०५ समास के मुख्य कितने भेद हैं, उनके नाम, लक्षण और उदाहरण लिखो।

समासों के मुख्य चार भेद हैं— अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व।

(१) अव्ययीभाव—जिस समास में प्रायः पहला खण्ड प्रधान होता है और समस्त पद अव्यय हो जाता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव का अर्थ है जो अव्यय नहीं है उसका भी अव्यय हो जाना। इसमें संज्ञा शब्द भी समास में आकर अव्यय हो जाते हैं। जैसे—प्रति दिन, आजन्म, बेखटके, हाथों-हाथ, एकाएक, मन ही मन, पहले-पहल, बीचों-बीच, धड़ाधड़, घर-घर इत्यादि।

(२) तत्पुरुष—जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास के दो भेद हैं— (१) व्यधिकरण तत्पुरुष अर्थात् जिसमें समस्त पदों के विग्रह करने पर पहले खण्ड और दूसरे खण्ड में भिन्न भिन्न विभक्तियाँ लगाई जावें। जैसे—राजसभा = राजा की सभा। इसमें पहले खण्ड में संबंधकारक की विभक्ति है और दूसरे में कर्ताकारक की विभक्ति। (२) समानाधिकरण तत्पुरुष अर्थात् जिसमें समस्तपद के विग्रह करने पर दोनों खण्डों में एक कर्ताकारक की ही विभक्ति रहे। जैसे चन्द्रमुख (चन्द्र सा मुख) इन दोनों पदों में एक ही विभक्ति है

व्यधिकरण तत्पुरुष को ही साधारणतया तत्पुरुष कहा जाता है और समानाधिकरण तत्पुरुष को कर्मधारय।

(क) व्यधिकरण तत्पुरुष—इसके पूर्व पद में जिस कारक का विभक्ति का लोप होता है उसी कारक के अनुसार इस समास की नाम होता है; जैसे—

कर्म तत्पुरुष—स्वर्गगत (स्वर्ग को गया हुआ)

करण तत्पुरुष—तुलसीकृत (तुलसी द्वारा की गई)
सम्प्रदान तत्पुरुष—हवन सामग्री (हवन के लिए सामग्री)
अपादान तत्पुरुष—धर्मभ्रष्ट (धर्म से भ्रष्ट हुआ हुआ)
सम्बन्ध तत्पुरुष—राजसभा (राजा की सभा)
अधिकरण तत्पुरुष—वनवास (वन में वास)

अभाव या निषेध के अर्थ में 'अ' या 'अन्' लगाने से होने वाले तत्पुरुष को नञ् तत्पुरुष कहते हैं। जैसे—अनपढ़ (न पढ़ा हुआ), अछूता (न छुआ हुआ)।

अलुक् तत्पुरुष— कभी कभी तत्पुरुष समास में पहले शब्द की विभक्ति का लोप नहीं होता तब उस समास को अलुक् तत्पुरुष समास कहा जाता है जैसे मनसिज = मनसि + ज = मन में पैदा होने वाला।

(ख) समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय—जिसमें विशेष्य, विशेषण या उपमान तथा उपमेय का मेल हो और विग्रह करने पर दोनों पदों में एक कर्ता कारक की विभक्ति ही रहे उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे—नीलकमल = नीला कमल; यहाँ नीला विशेषण और कमल विशेष्य है तथा उत्तर पद कमल प्रधान है। घनश्याम = घन (बादल) जैसा श्याम (काला)। भवसागर = भवरूपी-सागर। विद्याधन = विद्यारूपी धन। हिन्दी में कर्मधारय समास के बहुत कम उदाहरण मिलते हैं।

जिस 'कर्मधारय' समास में पहले शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध बताने वाले बीच के विशेषण का लोप हो जाता है। उसे 'मध्यमपद लोपी' समास कहते हैं। जैसे—घृतान्न (घृत मिश्रित अन्न), दहीबड़ा (दही में डूबा हुआ बड़ा)।

(ग) द्विगु—जिस कर्मधारय समास में पहला पद संख्या-वाचक विशषण हो और जिससे किसी समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसके पूर्व पद में संख्यावाचक विशेषण होने के कारण इसे संख्यावाचक कर्मधारय भी कहा जाता है। जैसे—त्रिभुवन (तीन भुवनों का समूह), चौमासा (चार मासों का समूह)। इसी तरह सतसई, दोपहर, पंसेरी आदि में भी द्विगु समास है।

(३) बहुव्रीहि—जिस समास में समस्त शब्द का कोई भी खण्ड प्रधान नहीं होता, और जिसमें 'वाला' अर्थ पाया जाता है (इसीलिए वह किसी अन्य संज्ञा का विशेषण हो जाता है) उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। जैसे—दशानन—(दश हैं आनन [मुख] जिसके = दश मुखों वाला), इस शब्द में कोई भी खण्ड ('दश' और 'आनन') प्रधान नहीं है, किन्तु इसका अर्थ ही प्रधान है। इसी प्रकार चतुर्भुज, बारहसिंगा, सुशील, दुरात्मा आदि शब्द भी बहुव्रीहि समास के उदाहरण हैं।

(४) द्वन्द्व—जिस समास में सब खण्ड प्रधान होते हैं और विग्रह (अलग अलग) करने पर 'और' या 'अथवा' लगता है, उसे 'द्वन्द्व समास' कहते हैं। जैसे—पाप-पुण्य = पाप अथवा पुण्य। दाल-रोटी = दाल और रोटी। इसी प्रकार अन्न-जल, दिन-रात, बेटा-बेटी, सेठ-साहूकार, हाथ-मुँह, लोक-परलोक इत्यादि भी समझने चाहियें।

प्र० ११४ बहुव्रीहि और कर्मधारय में क्या भेद है?

उ०—कर्मधारय और बहुव्रीहि में यह भेद है कि कर्मधारय में

समस्त पद का एक खण्ड दूसरे का विशेषण होता है परन्तु बहुव्रीहि समास के खण्डों में परस्पर विशेष्य-विशेषण भाव नहीं होता, अपितु उसमें समस्त पद अपने खंडों से भिन्न किसी अन्य पद का विशेषण होता है। जैसे—'नीलकमल' में नील कमल का विशेषण है इस लिए यहाँ कर्मधारय समास है पर 'दशमुख' में दश शब्द मुख का विशेषण नहीं परन्तु 'दशमुख' यह समस्तपद किसी और का विशेषण है, क्योंकि इसका अर्थ है 'दश हैं मुख जिसके'। इस लिए 'दशमुख' में बहुव्रीहि समास है।

प्र० ११५ निम्न-लिखित समस्त पदों में समास बताओ

यथाविधि, निडर, राजपुरुष, कमलवदन, चतुरानन, अकारण, कविताकौमुदी, साहित्यसुधा, भद्रपुरुष, चतुर्भुज, विद्यासागर, पञ्चवटी, सीताराम, अनपढ़, छापाखाना, महात्मा, लङ्कापति, बेटा-बेटी, त्रिलोकी, त्रिभुवन, दशानन चन्द्रमुखी, पुरुषोत्तम, बारहसिंगा, पीताम्बर, प्रतिवर्ष, परमात्मा, यथाशक्ति, चतुर्वेदी तथा दीर्घबाहु।

उत्तर—'यथाविधि' में अव्ययीभाव समास है (विधि के अनुसार जैसी विधि हो वैसे)

'निडर में' अव्ययीभाव, (विना डर के)

'राजपुरुष' में सम्बन्ध तत्पुरुष समास है (राजा का पुरुष' यहां पर 'का' सम्बन्ध सूचक चिह्न का लोप हुआ है)

'कमलवदन' में बहुव्रीहि समास है (कमल के समान है बदन जिसका)

'चतुरानन' में बहुव्रीहि समास है (चार हैं आनन जिसके)

'अकारण' में नञ् तत्पुरुष समास है।

'कविता-कौमुदी' में कर्मधारय समास है (कवितारूपी कौमुदी ज्योत्स्ना)

'साहित्य-सुधा' में कर्मधारय है (साहित्य रूपी सुधा),

'भद्रपुरुष' में भी कर्मधारय समास है (भद्र विशेषण है और पुरुष विशेष्य है),

'चतुर्भुज' में बहुव्रीहि समास है (चार हैं भुजा जिसकी),

'विद्यासागर' में सम्बन्ध तत्पुरुष है (विद्या का सागर)

'पञ्चवटी' में बहुव्रीहि समास है (पाँच हैं बट जहाँ पर, वह स्थली)

'सीताराम' में द्वन्द्व समास है (सीता और राम),

'अनपढ़' में नञ्तत्पुरुष समास है (न पढ़ा हुआ अनपढ़),

'छापाखाना' में सम्बन्ध तत्पुरुष है (छापे का खाना = घर) षष्ठी विभक्ति का लोप है।

'महात्मा' में बहुव्रीहि समास है (महान् है आत्मा जिसकी)

'लङ्कापति' में सम्बन्ध तत्पुरुष है (लङ्का का पति)।

'बेटा-बेटी' में द्वन्द्व समास है (बेटा और बेटी अथवा बेटा-या बेटी = बेटा-बेटी)।

'त्रिलोकी' में द्विगु समास है (तीन लोकों का समाहार = त्रिलोकी)।

'त्रिभुवन' में भी द्विगु है (तीन भुवनों का समाहार)

'दशानन' में बहुव्रीहि है (दश हैं आनन जिसके)

'चन्द्रमुखी' में बहुव्रीहि समास है (चन्द्र के समान है मुख जिसका)

'पुरुषोत्तम' में सप्तमी तत्पुरुष समास है (पुरुषों में उत्तम, पुरुषोत्तम)।

'बारहसिंगा' में बहुव्रीहि समास है (बारह हैं सींग जिसके)

'पीताम्बर' में बहुब्रीहि समास है (पीत=पीले हैं अम्बर [वस्त्र] जिसके)

'प्रतिवर्ष' में अव्ययीभाव समास है ('प्रति' उपसर्ग का 'वर्ष' शब्द के साथ समास होने से समस्त पद अव्यय हो गया है)

'परमात्मा' में कर्मधारय समास है ('परम' विशेषण है और 'आत्मा' उसका विशेष्य है)।

'यथाशक्ति' में अव्ययीभाव समास है। (यथा अव्यय के साथ 'शक्ति' का समास हुआ है जिसके कारण समस्त पद ही अव्यय हो गया है)

'चतुर्वेदी' में बहुब्रीहि समास है (चार हैं वेद जिसके, अर्थात् जिसने चारों वेद पढ़े हों उसे कहते हैं चतुर्वेदी)

'दीर्घबाहु' में भी बहुब्रीहि समास है (दीर्घ हैं बाहु जिसके)।

प्र० १०८—हिन्दी में बोले जाने वाले कुछ ऐसे शब्द लिखो जिन में द्विगु समास हो और कुछ ऐसे जिन में द्वन्द्व समास हो।

उत्तर—द्विगु समास—चौमासा (चार मासों=महीनों का समाहार—इकट्ठा होना) वर्षाकाल के चार महीनों को 'चौमासा' कहते हैं। 'दुअन्नी, चवन्नी'—दो आनों के समाहार को दुअन्नी, और चार आनों के समाहार को चवन्नी कहा जाता है। इसी प्रकार दोपहर, सतसई आदि अनेक द्विगु समास के शब्द हिन्दी में बोले जाते हैं।

द्वन्द्व—दिन-रात, बेटा-बेटी, दाल-रोटी आदि।

प्र० १०६—सन्धि किसे कहते हैं ?

उत्तर—दो अक्षरों के पास पास होने के कारण मिल जाने से उनमें जो विकार (स्वरूप बदलना) हो जाता है उसे 'सन्धि'

कहते हैं। जैसे—राम + अवतार = रामावतार। विद्या + आलय = विद्यालय। कवि + इन्द्र = कवीन्द्र। इत्यादि।

प्र० ११० सन्धि कितने प्रकार की है? उन प्रकारों के नाम और लक्षण बताकर पाँच पाँच उदाहरण दो।

उत्तर—सन्धि तीन प्रकार की है—स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि और विसर्गसन्धि।

(१) स्वरसन्धि—स्वर के साथ स्वर की सन्धि को स्वरसन्धि कहते हैं। जैसे—शिव + आलय = शिवालय। भारत + इन्दु = भारतेन्दु। वन + ओषधि = वनौषधि। सु + आगत = स्वागत। पौ + अक = पावक।

(२) व्यञ्जन सन्धि—व्यञ्जन के साथ स्वर या व्यञ्जन की संधि को 'व्यञ्जन सन्धि' कहते हैं। जैसे—सत्+चरित्र = सच्चरित्र। दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन। उद्+लेख = उल्लेख। जगत् + मान्य = जगन्मान्य। षट्+दर्शन = षड्दर्शन।

(३) विसर्ग सन्धि—विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन की सन्धि को 'विसर्ग सन्धि' कहते हैं। जैसे—यशः+अभिलाषी = यशोभिलाषी। अतः+एव = अतएव। निः+चिन्त = निश्चिन्त। धनुः+टङ्कार = धनुष्टङ्कार। निः + तार = निस्तार।

प्र० १११—स्वर सन्धि के कितने भेद हैं, उनके लक्षण और उदाहरण लिखो।

स्वर सधि के पाँच भेद हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, और अयादि।

दीर्घ सन्धि—ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ से परे यदि क्रम से ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ हों तो दोनों के स्थान में वही दीर्घ स्वर हो जाता है। इसे दीर्घसन्धि कहते हैं। जैसे—हिम+आलय = हिमालय। विद्या+अर्थी = विद्यार्थी। कवि+इन्द्र = कवीन्द्र।

गुण-सन्धि—अ या आ से परे यदि ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ या ऋ हों तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ, तथा अर् हो जाता है। इसे गुण-सन्धि कहते हैं। जैसे—देव+इन्द्र=देवेन्द्र। महा+इन्द्र=महेन्द्र। वीर+उचित=वीरोचित। महा+ऋषि=महर्षि।

वृद्धि सन्धि—अ या आ से परे यदि ए, ऐ, या ओ, औ हों तो दोनों के स्थान में क्रम से ऐ, औ हो जाते हैं, इसे वृद्धि-सन्धि कहते हैं। जैसे—सदा+एव=सदैव। वन+ओषधि=वनौषधि।

यण् सन्धि—ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, वा ऋ से परे यदि कोई असमान स्वर हो तो इ वा ई को य्, उ वा ऊ को व् और ऋ को र् हो जाता है, इसे यण्-सन्धि कहते हैं। जैसे—यदि+अपि=यद्यपि। सु+आगत=स्वागत।

अयादि सन्धि—ए, ओ, ऐ, औ से परे यदि कोई स्वर हो तो ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय् तथा औ को आव् हो जाता है, इसे अयादि संधि कहते हैं। जैसे—भो+अन=भवन। गै+अक=गायक। भौ+उक=भावुक।

प्र० ११२—नीचे लिखी सन्धियाँ किन अवस्थाओं में होती हैं?

र् का लोप, विसर्ग को ओ, विसर्ग को श्, न् को ण् 'त् को द्।

उत्तर—ह्रस्व स्वर के बाद के र् से परे यदि र हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है—इस नियम के अनुसार निर्+रस में र् का लोप होकर 'नीरस' बन गया है।

विसर्ग को ओ—यदि विसर्ग के पहले अ हो और पीछे अ, या वर्ण का तीसरा, चौथा, पाँचवा अक्षर या य, व, र, ल में से कोई अक्षर हो तो पहले 'अ' और विसर्ग को 'ओ' हो जाता है। जैसे—यशः+अभिलाषी=यशोऽभिलाषी, मनः+हर=मनोहर।

विसर्ग को श्—विसर्ग के परे च् या छ हों तो—विसर्ग को 'श्' हो जाता है। जैसे—निः+चय=निश्चय।

न् को ण्—ऋ, र्, ष् से परे न् को ण् हो जाता है। स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, और य, व, में से किन्हीं वर्णों के बीच में आ जाने पर भी 'न्' को 'ण्' हो जाता है जैसे—राम+अयन=रामायण। प्र+मान=प्रमाण।

त् को द्—त् के आगे कोई स्वर, ग्, घ्, द्, ध्, ब् भ् अथवा य्, र्, व् में से कोई अक्षर हो तो 'त्' को 'द्' हो जाता है जैसे—जगत्+ईश=जगदीश। भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति।

प्र० ११३ नीचे लिखे शब्दों में सन्धिच्छेद करो—

नवौदन, सच्चिदानन्द, यशोधर, रवीन्द्र, अत्युत्तम, निष्कलङ्क, राजेन्द्र, निर्मल, शरणागत, अभ्यन्तर, अत्याचार, नीरस, सज्जन, महेश, अन्वित, तद्धित, जगदीश, सत्यानन्द, प्रत्युत्तर, राजर्षि।

उत्तर—नवौदन=नव+ओदन। सच्चिदानन्द=सत्+चित आनन्द। यशोधर=यशः+धर। रवीन्द्र=रवि+इन्द्र। अत्युत्तम=अति+उत्तम। निष्कलङ्क=निः+कलङ्क। राजेन्द्र=राजा+इन्द्र। निर्मल=निः+मल। शरणागत=शरण+आगत। अभ्यन्तर=अभि+अन्तर। अत्याचार=अति+आचार। नीरस=निर्+रस। सज्जन=सत्+जन। महेश=महा+ईश। अन्वित=अनु+इत। तद्धित=तत्+हित। जगदीश=जगत्+ईश। सत्यानन्द=सत्य+आनन्द। प्रत्युत्तर=प्रति+उत्तर। राजर्षि=राजा+ऋषि।

प्र० ११४——नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करो——

रमा+ईश, यशः+दा, सम्+जय, दिक्+विजय, स्व+छन्द, हरि+इच्छा, बहिः+मुख, उत्+चार, महा+इन्द्र।

उत्तर—रमा+ईश=रमेश। यशः+दा=यशोदा। सम्+जय=सञ्जय। दिक्+विजय=दिग्विजय। स्व+छन्द=स्वच्छन्द। अति+आचार=अत्याचार। बहिः+मुख=बहिर्मुख। उत्+चार=उच्चार। महा+इन्द्र=महेन्द्र।

प्र० ११५—संधि और संयोग में तथा सन्धि और समास में क्या अन्तर है ?

सन्धि और संयोग में यह अन्तर है कि संयोग में अक्षर केवल मिल जाते हैं पर बदलते नहीं, किन्तु सन्धि में उच्चारण के नियमानुसार एक में या दोनों अक्षरों में परिवर्तन हो जाता है और कभी-कभी दोनों अक्षरों की जगह उन से भिन्न कोई तीसरा अक्षर आ जाता है। इस के अतिरिक्त संयोग केवल व्यजंनों में ही होता है। स्वरों में संयोग नहीं होता पर सन्धि स्वरों और व्यजनों दोनों में होती है।

सन्धि और समास में यह अन्तर है कि समास में दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर एक पद बन जाता है, उनके बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। पर सन्धि में एक या दो अक्षरों में ही मिल कर विकार होता है।

प्र० ११६—वाक्य-रचना में किन किन बातों पर विचार किया जाता है ?

उत्तर—वाक्य-रचना में इन तीन बातों का विचार किया जाता है—

मेल, क्रम और प्रयोग।

प्र० ११७—पदों का मेल क्या होता है ?

उत्तर—वाक्य के पदों का एक दूसरे से लिङ्ग, वचन पुरुष, काल आदि के अनुसार जो सम्बन्ध रहता है उसे अन्वय या मेल कहते हैं। वाक्य में कर्ता या कर्म के साथ क्रिया का, संज्ञा के साथ सर्वनाम का, सम्बन्धी के साथ सम्बन्ध का और विशेष्य के साथ विशेषण का मेल होता है।

प्र० ११८—कर्त्ता और कर्म के साथ क्रिया के मेल के क्या नियम ह ?

उत्तर—(१) जब कर्ता विभक्ति-रहित होता है तो क्रिया उसी के अनुसार होती है। जैसे—मैं रोटी खाता हूँ। हम रोटी खाते हैं। वह रोटी खाता है। सीता रोटी खाती है। इन वाक्यों में क्रिया के लिंग, वचन, और पुरुष कर्त्ता के अनुसार हैं।

(२) यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन तथा पुरुष के कई विभक्तिरहित कर्त्ता 'और' या इसी अर्थ के किसी अन्य योजक अव्यय से जुड़े हुए हों तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी। जैसे—मोहन और सोहन पढ़ते हैं। सीता और सावित्री खेल रही हैं इत्यादि।

(३) विभक्तिरहित अनेक अप्राणिवाचक कर्त्ताओं से यदि एक वचन का ही अर्थ निकले तो कई कर्त्ता होने पर भी क्रिया एक वचन में ही रहती है। जैसे—इस बाढ़ में मेरी खेती घर-द्वार, माल-असबाब, सब ही बह गया—इत्यादि।

(४) यदि भिन्न-भिन्न लिङ्गों के विभक्तिरहित एक-वचन कर्ता 'और' या इसी तरह के किसी अन्य योजक अव्यय से

जुड़े हों तो क्रिया प्रायः पुँल्लिङ्ग और बहुवचन में होती है। जैसे—जब मैं वहाँ पहुँचा तब राम और शकुन्तला खेल रहे थे। इस राज्य में बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं—इत्यादि।

(५) यदि भिन्न-भिन्न लिङ्गों के विभक्तिरहित कर्ता बहुवचन में हों तो क्रिया होगी तो बहुवचन में, पर उसका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा। जैसे—प्रतिवर्ष हज़ारों स्त्रियाँ और पुरुष हिन्दी भवन से पुस्तकें खरीदते हैं, या हज़ारों पुरुष और स्त्रियाँ हिन्दी भवन से पुस्तकें खरीदती हैं।

(६) यदि भिन्न-भिन्न लिंगों के विभक्तिरहित कर्ता भिन्न-भिन्न वचनों में हों तो क्रिया बहुवचन में होगी और उसका लिंग अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होगा। जैसे—वहाँ एक बैल दो गौएँ और बहुत से घोड़े चर रहे थे। वहाँ एक बैल दो घोड़े और बहुत सी गौएँ चर रही हैं। ऐसी जगह प्रायः पुंल्लिंग और बहुवचन कर्त्ता अन्त में रहता है।

यदि पिछला कर्त्ता एकवचन हो तो क्रिया एक वचन और बहुवचन दोनों में आ सकती है। जैसे—दो गौएँ, तीन घोड़े और एक बैल वहाँ चर रहा था (चर रहे थे)

(७) आदर प्रकाशित करने के लिये एकवचन कर्ता के साथ भी बहुवचन की क्रिया लगाई जाती है। जैसे—हिन्दी भवन लाहौर के संचालक आज यहाँ आने वाले हैं।

(८) यदि वाक्य में विभक्तिरहित अनेक कर्ता हों और उनके बीच में 'या' आदि विभाजक शब्द हों तो क्रिया लिंग और वचन में अन्तिम कर्ता के अनुसार होती है। जैसे—राम

की गौएँ या मोहन का घोड़ा बिकेगा। मोहन का घोड़ा या राम की गौएँ बिकेंगी।

(९) यदि एक ही वाक्य में भिन्न-भिन्न पुरुषों के विभक्ति रहित कर्त्ता हों तो क्रिया ऊँचे पुरुष के अनुसार होगी। उत्तम पुरुष को सब से ऊँचा समझना चाहिए, मध्यम को दूसरे स्थान पर और अन्य पुरुष को तीसरे स्थान पर। जैसे—हम और तुम पढ़ेंगे या तुम और हम पढ़ेंगे। हम और वे खेलेंगे। तुम और वे खेलोगे। हम, तुम और वे खेलेंगे या तुम, हम और वे खेलेंगे।

(१०) यदि कर्ता विभक्तिसहित हो और कर्म विभक्तिरहित तो क्रिया कर्म के अनुसार होगी। जैसे—मोहन ने आम खाये, मोहन ने रोटी खाई।

(११) जिस वाक्य में कर्त्ता विभक्तिरहित हो और कर्म एक से अधिक हों वहाँ जिस कर्म के साथ विभक्ति-चिह्न नहीं होगा क्रिया उसी के अनुसार होगी। जैसे—मोहन ने गरीब को पैसा दिया। मोहन ने गरीब को पैसे दिये।

(१२) यदि कर्त्ता और कर्म दोनों विभक्ति सहित हों तो क्रिया का मेल किसी से नहीं होता, वह सदा एकवचन पुँल्लिङ्ग और प्रथम पुरुष में रहती है। जैसे—राजाओं ने मन्त्रियों को बुलाया या राजा ने मन्त्री को बुलाया।

(१३) जब क्रिया का कर्म न हो सके (जैसे भाव वाच्य में) या कर्म लुप्त हो तो सविभक्तिक कर्त्ता की क्रिया एक वचन, पुँल्लिङ्ग तथा प्रथम पुरुष में आती है। जैसे—इतनी रात गये भी मुझ से सोया नहीं जाता। मैंने देखा था।

(१४) कुछ शब्दों का केवल बहुवचन में ही प्रयोग होता है अतः उनके साथ क्रिया भी बहुवचन में ही आती है। जैसे—राम के वियोग में महाराज दशरथ के प्राण निकल गये।

प्र० ११९—सम्बन्ध और सम्बन्धी के मेल के क्या नियम हैं?

उ०—(१) सम्बन्ध कारक की विभक्ति (चिह्न) में वे ही लिंग और वचन होते हैं जो सम्बन्धी पद के होते हैं। जैसे—देवदत्त का लड़का, देवदत्त के लड़के, देवदत्त की लड़की।

(२) जब सम्बन्धी पद पुँल्लिंग हों और उसके आगे कोई विभक्ति हो तो उसके एकवचन होने पर भी सम्बन्ध कारक में 'का' और 'रा' की जगह 'के' और 'रे' चिह्न लगते हैं। जैसे—कल मोहन के भाई का विवाह है। मेरे पत्र को पढ़कर फाड़ देना,— इत्यादि

(३) जब अनेक सम्बन्धी होते हैं तब सम्बन्ध कारक के चिह्न पहले सम्बन्धी के अनुसार होते हैं। जैसे—राम का लड़का, लड़की और भाई देहली जारहे हैं—इत्यादि

प्र० १२०—यदि एक ही वाक्य में भिन्न भिन्न पुरुषों के विभक्ति रहित कर्ता हों तो क्रिया किस पुरुष में होगी।

उ०—ऐसे स्थान पर क्रिया ऊँचे पुरुष के अनुसार होगी। उत्तम पुरुष को सब से ऊँचा समझा जाता है, मध्यम पुरुष दूसरे स्थान पर और अन्य पुरुष तीसरे स्थान पर। जैसे हम और तुम पढ़ेंगे या तुम और हम पढ़ेंगे। तुम और वे खेलोगे। हम तुम और वे खेलेंगे या तुम हम और वे खेलेंगे।

प्र० १२१—क्रम किसे कहते हैं? वाक्य में शब्दों का क्रम किस तरह होता है?

वाक्य में पदों को उनके अर्थों और सम्बन्ध के अनुसार यथा-स्थान रखने को क्रम कहते हैं। क्रम के कुछ नियम नीचे दिये जाते हैं—

(क) साधारणतः वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म या पूरक और अन्त में क्रिया रखी जाती है। जैसे—देवदत्त खाना खाता है; वह दूत है। जहाँ दो कर्म हों वहाँ गौण कर्म पहले और प्रधान कर्म पीछे रखा जाता है; जैसे—उसने मोहन को वह बात सुझा दी।

(ख) सम्बन्धकारक संबंधी से पहले, विशेषण विशेष्य से पहले और क्रियाविशेषण क्रिया से पहले रखे जाते हैं; जैसे—वीर पुरुष अपने देश की सेवा को अपना कर्तव्य समझते हैं। परन्तु विधेय विशेषण और उपाधिसूचक (Degree) तथा जातिनिर्देशक विशेषण विशेष्य के पीछे आते हैं। इन में भी यह ख्याल रखना चाहिये कि पदवी (Title) सूचक विशेषण विशेष्य के पहले ही आते हैं। जैसे—उनका कथन ठीक है। रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए० ने डाक्टर बहादुरचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, एम ओ० एल, डी० लिट० की 'लोकोक्तियाँ और मुहावरे' नामक पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की है।

(ख) करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये चार कारक प्रायः कर्ता और कर्म के बीच में आते हैं। इन में भी पहले अधिकरण फिर अपादान तत्पश्चात् संप्रदान और अन्त में करणकारक आता है। यदि अधिकरण एक से

अधिक हों, तो पहले कालवाची अधिकरण रखा जाता है। जैसे— मैं कल दिनमें हिन्दीभवन से पुस्तकें खरीदने के लिए लाहौर जाऊँगा। वह दिन में हिन्दी भवन प्रेस में काम करता है।

(ग) सम्बोधन प्रायः वाक्य के आदि में आता है। जैसे— भाई! यह क्या कर रहे हो?

(घ) प्रश्नवाचक शब्द उसी के पहले रक्खा जाता है जिसके विषय में मुख्यतया प्रश्न किया जाय। प्रश्नवाचक शब्द के इधर-उधर होने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है। जैसे—"मनोहर क्या पढ़ रहा है?" (अर्थात् कौनसी पुस्तक पढ़ रहा है) और "क्या मनोहर पढ़ रहा है" (पढ़ रहा है या नहीं) इन दोनों वाक्यों का अर्थ "क्या" के स्थान-परिवर्त्तन के कारण भिन्न भिन्न हो गया है।

(ङ) भी, ही, तो, भर, तक इत्यादि शब्द उन्हीं के पीछे और केवल, सिर्फ आदि शब्द उन्हीं के पहले आते हैं जिनके बारे में ये निश्चय प्रकट करते हैं या जिनकी विशेषता दिखाते हैं। इनके इधर-उधर होने से भी वाक्य के अर्थ में अन्तर पड़ जाता है। जैसे—मैं भी पढ़ रहा हूँ (कोई और पढ़ रहा है साथ मैं भी पढ़ रहा हूँ), मैं पढ़ भी रहा हूँ (साथ-साथ और काम भी कररहा हूँ) आज मैं ही बाजा बजाऊँगा (और कोई नहीं)। आज ही मैं बाजा बजाऊँगा (फिर कभी नहीं), आज मैं बाजा ही बजाऊँगा और कुछ नहीं, केवल हिन्दी भवन से केशव प्रसाद शुक्ल कृत हिन्दी-विलास-चन्द्रिका खरीदूँगा (और किसी दुकान से नहीं) हिन्दी भवन से केवल हिन्दी-विलास-चन्द्रिका खरीदूँगा (और कोई पुस्तक नहीं)।

(च) जब, तब, जहाँ, तहाँ आदि सम्बन्धवाचक क्रियाविशेषण बहुधा वाक्य के आरम्भ में आते हैं। जैसे—जब मैं वहाँ गया तब वे कुछ लिख रहे थे।

(छ) पूर्वकालिक क्रिया अपने कर्म आदि सहित मुख्य क्रिया के पहले आती है; जैसे—मैं हिन्दी भवन से पुस्तकें खरीद कर आगे चलूँगा।

(ज) सम्बन्ध-बोधक अव्यय जिस संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध रखते हैं उसके बाद आते हैं, योजक अव्यय जिनको जोड़ते हैं उनके बीच में आते हैं, द्योतक अव्यय प्रायः वाक्य के आदि में आते हैं। जो आदमी यहाँ आया था वह चला गया। राम और श्याम कल यहाँ आये थे। हाय ! उसका इकलौता बेटा भी आज चला गया।

प्र० १२२—'रोजमर्रा' किसे कहते हैं? और मुहावरा किसे? उदाहरण भी दो।

उत्तर—रोज़ की बोलचाल में जिस रीति से पदों का प्रयोग होता है उसे 'रोज़मर्रा' कहते हैं। जैसे—'सात-आठ दिन में आएँगे, यहाँ 'सात-आठ' की जगह 'छः आठ' या सात-नौ, ऐसा प्रयोग नहीं होता क्योंकि बोल-चाल में ऐसा प्रयोग किया नहीं जाता।

मुहावरा—जो वाक्य या वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को न बता कर एक विलक्षण अर्थ को प्रकट करता है उसे 'मुहावरा' कहते हैं जैसे—'उसने भंडा फोड़ दिया' का अर्थ 'बर्तन फोड़ दिया' नहीं, अपितु 'भेद प्रकट कर दिया है' इत्यादि।

प्र० १२३—नीचे लिखे वाक्यों में पदों के क्रम को ठीक करो—

"बैठी छत खुली पर खा रही हवा रामेश्वरी थी। खेल रहे थे बच्चे दोनों दौड़ कर छत पर। बड़ा भला मालूम खेलना कूदना हो रहा था उन बच्चों का रामेश्वरी को।"

उत्तर—रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी। दोनों बच्चे दौड़ दौड़ कर छत पर खेल रहे थे। रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था।

प्र० १२४—उद्देश्य किसे कहते हैं और विधेय किसे ?

उ०—जिसके विषय में कुछ कहा जाय उसे अर्थात् कर्ता को 'उद्देश्य' कहते हैं और जो कुछ उद्देश्य के विषय में कहा जाय उसे 'विधेय' कहते हैं। जैसे—'गाड़ी चलती है' इस में 'गाड़ी' उद्देश्य और 'चलती है' विधेय है।

प्र० १२५—कौन से शब्द-भेद उद्देश्य के रूप में आते हैं ?

उ०—उद्देश्य के रूप में निम्नलिखित शब्द-भेद आते हैं—

संज्ञा, जैसे—पानी बहता है

सर्वनाम, जैसे—मैं गाता हूँ

विशेषण, जैसे—परिश्रमी भूखा नहीं मरता (विशेषण विशेष्य की तरह प्रयुक्त हुआ है)

वाक्यांश जसे—खुली हवा में घूमना स्वास्थ्यप्रद है।

प्र० १२६—उद्देश्य और विधेय का विस्तार किस प्रकार होता है ? उदाहरण देकर समझाओ।

३०—सम्बन्ध कारक, विशेषण और क्रियाविशेषण—आदि के जुड़ने से उद्देश्य और विधेय का विस्तार होता है। जैसे—मोहन की पुस्तक बाहर पड़ी भीग रही है। इस में 'पुस्तक' उद्देश्य है पर 'मोहन की' जुड़ जाने से—उसका विस्तार हो गया है और अब 'मोहन की पुस्तक' इतना उद्देश्य हो गया। 'भीग रही है' यह मुख्य विधेय है 'बाहर पड़ी' जुड़ जाने से उस का विस्तार हो गया है। नीचे लिखे शब्द भेदों से उद्देश्य का विस्तार होता है।

विशेषण से, जैसे—काली भैंस चरती है।

सम्बन्धकारक से, जैसे—श्याम का पत्र आया है।

समानाधिकरण से, जैसे—मैं देवीदास प्रतिज्ञा करता हूँ।

वाक्यांश से,जैसे—इतना खर्च करके भी तुम पास न हो सके। ऊपर के वाक्यों में रेखाङ्कित पद उद्देश्य का विस्तार करते हैं।

विधेय का विस्तार नीचे लिखे शब्द-भेदों से हो सकता है—

१. यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसके कर्म से, जैसे—माली आम तोड़ता है।

२. यदि क्रिया अकर्मक हो तो क्रिया के पूरक से, जैसे—मोहन चोर निकला।

३. क्रिया-विशेषण से, जैसे--राम अभी आया है।

४. करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण आदि कारकों से और पूर्वकालिक क्रिया या द्योतक अव्ययों से भी विधेय का विस्तार हो सकता है।

प्र० १२७—रचना के अनुसार वाक्य के कितने भेद होते हैं ? लक्षण, उदाहरण सहित वर्णन करो—

उत्तर—रचना के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–१. सरल या साधारण, २. मिश्रित, ३. संयुक्त।

(१) जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है उसे 'सरल' वाक्य कहते हैं। जैसे—'राम खेलता है' इसमें 'राम' यह एक उद्देश्य है और 'खेलता है' एक विधेय है। 'दर्जी सुई से कपड़ सीता है' यह भी सरल वाक्य है। इसमें भी 'दर्जी' यह एक उद्देश्य और 'सीता है' यह एक विधेय है, 'सुई से' और 'कपड़' विधेय का विस्तार हैं।

(२) मिश्रित वाक्य—जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो और उसके आश्रित एक या अधिक उपवाक्य हों उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे—'मैंने सुना है कि वह वहाँ पहुँच गया है' इसमें 'मैंने सुना है' यह प्रधानवाक्य है और 'वह यहाँ पहुँच गया है, यह आश्रित वाक्य है।

(३) संयुक्त वाक्य—जिसमें दो या दो से अधिक सरल अथवा मिश्रित वाक्य एक दूसरे पर आश्रित न होकर मिलते हैं, उसे 'संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे—स्नान से शरीर शुद्ध होता है और सत्य से मन शुद्ध होता है। दोनों सरल वाक्य हैं। वह आया था पर यह कह कर चला गया कि जब हत्यारे का पता लगा लूँगा तभी विश्राम लूँगा—इसमें 'वह आया था' यह सरल वाक्य है और 'कह कर .... विश्राम लूँगा' यह मिश्रित वाक्य है। दोनों के मेल के कारण सम्पूर्ण वाक्य संयुक्त कहलायेगा।

प्र० १२८—आश्रित वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? और समानाधिकरण वाक्य कितने प्रकार के?

उत्तर--आश्रित वाक्य तीन प्रकार के होते हैं--

संज्ञा वाक्य, विशेषणवाक्य और क्रियाविशेषण वाक्य।

जिस आश्रित वाक्य का प्रयोग प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा—'कर्ता, कर्म या पूरक—की जगह होता है उसे संज्ञा वाक्य कहते हैं। जैसे--"मैंने तुम्हारी पुस्तक चुराई यह बिल्कुल झूठ है—यहाँ 'मैंने तुम्हारी पुस्तक चुराई' यह "है" क्रिया के कर्ता की जगह प्रयुक्त हुआ है इस लिए संज्ञा वाक्य है। संज्ञा वाक्य प्रायः 'कि' योजक से शुरू होता है पर जब प्रधान वाक्य के पूर्व आवे तो 'यह' द्वारा मिलाया जाता है।

विशेषण वाक्य—जब कोई आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा के विशेषण का काम देता है तब उसे विशेषण वाक्य कहते हैं; जैसे--'वे लोग जिन्हें बाप-दादे का कमाया हुआ रुपया मिल जाता है, रुपयों की कदर नहीं जानते' इसमें 'जिन्हें बाप-दादे का कमाया हुआ रुपया मिल जाता है' यह आश्रित वाक्य 'लोग' (कर्ता) का विशेषण है। ऐसे ही 'उस नौकर को रख कर क्या करूँगा जो आराम-पसन्द हो' इसमें 'जो आराम-पसन्द हो' यह वाक्य 'नौकर' (कर्म) का विशेषण है। विशेषण वाक्य 'जो, जिसने, जैसा, जिन्हें' आदि से शुरू होते हैं।

क्रियाविशेषण वाक्य—जो आश्रित वाक्य किसी क्रिया के विशेषण का काम देता है उसे क्रियाबिशेषण बाक्य कहते हैं। जैसे—'जब वह यहाँ आया तब मैं खाना खा रहा था' इस में 'जब वह यहाँ आया' काल-वाचक क्रिया-विशेषण है। इसी प्रकार 'जितना वह खाता है उतना दो आदमी नहीं खा

सकते' इसमें 'जितना वह खाता है' परिमाण-वाचक क्रिया-विशेषण है। क्रिया-विशेषण वाक्य जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यदि, यद्यपि आदि शब्दों से शुरू होते हैं और प्रधान वाक्यों में उनके नित्य-सम्बन्धी शब्द आते हैं।

प्र० १२९—मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य में क्या भेद है?

उ०—मिश्रित वाक्य में एक वाक्य प्रधान होता है और दूसरे सब अप्रधान। किन्तु संयुक्त वाक्य में सब वाक्यांश प्रायः स्वतन्त्र (एक दूसरे के आश्रित नहीं) होते हैं, यही इन में भेद है।

प्र० १३०—संयुक्त वाक्य कितनी प्रकार के होते हैं?

उ०—संयुक्त वाक्य चार प्रकार के होते हैं—

(क) संयोजक—इनमें एक वाक्य दूसरे के साथ संयोजक अव्यय द्वारा जुड़ा रहता है। जैसे—तुम गये और वह आ गया।

(ख) विभाजक—इनमें वाक्यों का परस्पर भेद या विरोध का सम्बन्ध रहता है। जैसे—वह आया तो था पर दे कुछ नहीं गया। प्रिय बोलना चाहिए पर असत्य नहीं।

(ग) विकल्प-सूचक—इनमें दो बातों में से एक का स्वीकृत होना पाया जाता है। जैसे—या खेलने जाओ या बैठ कर पढ़ो।

(घ) परिणाम-बोधक—इनमें एक वाक्य दूसरे का परिणाम होता है। जैसे—आज मेरे पास एक भी पैसा नहीं इस लिए आज मुझे इन चीज़ों के लिए दिक न करो।

प्र० १३१— सरल वाक्य और मिश्रित वाक्य का विग्रह किस प्रकार किया जाता है ?

उ०—सरल वाक्य के विग्रह में नीचे लिखी बातें दिखानी चाहिए—

१. उद्देश्य (कर्ता), २. उद्देश्य का जिन पदों द्वारा विस्तार किया गया हो, ३. विधेय पद (क्रिया), ४. विधेय का विस्तार। जैसे—'राम के लड़के ने कुत्ते को मार कर भगा दिया,—इसमें 'लड़के ने' उद्देश्य है 'राम के' उसका विस्तार है। इसी प्रकार 'भगा दिया' विधेय है और 'मार कर' उसका विस्तार है।

मिश्रित-वाक्य के विग्रह में प्रधान खण्ड वाक्य कौन है और आश्रित वाक्य कौन इसका निर्देश करके यह बताया जाता है कि आश्रित-वाक्य संज्ञा-वाक्य है, विशेषण-वाक्य है या क्रियाविशेषण-वाक्य। तत्पश्चात् प्रत्येक वाक्य खंड का विग्रह अलग अलग सरल वाक्य की तरह किया जाता है।

प्र० १३२—पद-परिचय क्या होता है ? पद-परिचय और वाक्य विग्रह में क्या भेद है ? भिन्न-भिन्न शब्द-भेदों के परिचय में किन-किन बातों का वर्णन आवश्यक है ?

वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरण शास्त्र के अनुसार परिचय देना—उनके प्रकार आदि तथा उनका परस्पर सम्बन्ध बताना पद-परिचय या शाब्दबोध कहलाता है।

वाक्य-विग्रह में वाक्य के मुख्य अंश—कर्ता, क्रिया और उन दोनों के विस्तार करने वाले शब्दों को ही अलग करके दिखाया जाता है पर पद-परिचय में प्रत्येक पद का विस्तारपूर्वक परिचय दिया जाता

है। जैसे—"सौदागर कपड़े बेचता है" इस वाक्य का विग्रह करते हुए इतना बताना पर्याप्त है कि 'सौदागर' उद्देश्य (कर्ता) है; 'बेचता है' विधेय (क्रिया) है और 'कपड़े' विधेय का विस्तार (कर्म) है। पर पद-परिचय में प्रत्येक पद का विस्तृत परिचय देना पड़ेगा। 'बेचता है' क्रिया के लिए यह बताना होगा कि यह किस तरह की क्रिया है (सकर्मक है या अकर्मक) किस काल की है, किस वचन की है इत्यादि।

पद-परिचय में जिन जिन बातों का वर्णन करना आवश्यक है वे नीचे दी जाती हैं।

संज्ञा—प्रकार (व्यक्ति-वाचक, जाति-वाचक आदि), लिङ्ग (पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग), वचन (एक-वचन, बहु-वचन) कारक (कर्ता, कर्म आदि) और उसका क्रिया आदि दूसरे पदों से सम्बन्ध।

सर्वनाम—प्रकार (पुरुष-वाचक, निश्चय-वाचक आदि) जिस संज्ञा के बदले प्रयुक्त हुआ हो उसका परिचय, पुरुष (प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष आदि) लिङ्ग, वचन, कारक तथा दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध।

विशेषण—प्रकार (गुण-वाचक, परिमाणवाचक आदि) विशेषण का परिचय, लिङ्ग, वचन आदि।

क्रिया—प्रकार (सकर्मक, अकर्मक आदि), वाच्य (कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य आदि) काल और उसके अवान्तर भेद (सामान्य भूत, सामान्य वर्तमान, आदि) पुरुष, लिङ्ग, वचन तथा कर्ता कर्म का परिचय।

क्रियाविशेषण—प्रकार (समयवाचक, स्थानवाचक, आदि) जिस क्रिया का विशेषण हो उसका परिचय।

mohan lal 1st year S.P. college Srinagar

सम्बन्ध-बोधक—सम्बन्धी शब्दों का परिचय।

योजक—प्रकार (संयोजक, वियोजक, आदि) जिन शब्दों वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ें उनका परिचय।

द्योतक—जिस भाव को प्रकट करे उसका परिचय।

प्र० १३३—नीचे लिखे वाक्यों का पदपरिचय दो—

(१) जो परिश्रम करेगा वह अवश्य परीक्षा में पास हो जायगा।

(२) पशुओं को कभी न सताओ।

(३) ईश्वर बड़ा दयालु है।

(१) जो—संबन्ध-वाचक सर्व-नाम, पुँल्लिग, एक-वचन, कर्ता-कारक, 'करेगा' क्रिया का कर्ता है।

परिश्रम—भाववाचक संज्ञा, पुँल्लिग एक-वचन, कर्म कारक, 'करेगा' क्रिया का कर्म है।

करेगा—सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, भविष्यत् काल, (सामान्य भविष्यत्) प्रथम पुरुष, एक-वचन, पुँल्लिग, 'जो' इसका कर्ता है और 'परिश्रम' कर्म है।

वह—संबन्ध-वाचक सर्वनाम, ('जो' का नित्य-संबन्धी) पुँल्लिग, एक-वचन, कर्ता कारक, 'पास होजायगा'। क्रिया का कर्ता।

अवश्य—रीतिवाचक क्रिया-विशेषण 'पास हो जायगा' क्रिया का विशेषण।

परीक्षा में—जाति-वाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एक-वचन, अधिकरण कारक।

पास हो जायगा—संयुक्त क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, भविष्यत् काल, प्रथम पुरुष, पुँल्लिंग, एक वचन 'वह' इसका कर्ता है।

(२) पशुओं को—संज्ञा, जाति-वाचक, पुँल्लिङ्ग, बहुवचन, कर्म-कारक, 'सताओ' क्रिया का कर्म।

कभी—क्रिया-विशेषण, काल वाचक, 'सताओ' क्रिया का विशेषण।

न—रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (सताओ क्रिया का)

सताओ—सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, विधि, मध्यम पुरुष, बहुवचन, 'पशुओं को' इसका कर्म है।

(३) ईश्वर—संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुँल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, "है" क्रिया का कर्ता।

बड़ा—अनिश्चित परिमाण-वाचक विशेषण (दयालु विशेषण का)

दयालु—विशेषण (विधेय) गुणवाचक, पुँल्लिङ्ग, एकवचन। इसका विशेष्य "ईश्वर" है।

है—होना क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमान, अन्य पुरुष, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, इसका कर्ता "ईश्वर" है।

प्र० १३४—विशेषणों की दोहराने की आवश्यकता कहाँ पड़ती है, उदाहरण दो।

उ०—पृथकता या अधिकता दिखाने के लिए कहीं कहीं विशेषणों को दोहराया जाता है। जैसे—छोटे-छोटे फूल, लाल-लाल आँखें।

———

हिन्दी-रत्न परीक्षा की सहायक पुस्तकें

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

[ले०—श्री बहादुरचन्द शास्त्री, एम. ए. एम. ओ. एल.]

हिन्दी में प्रचलित लोकोक्तियों तथा मुहावरों के भिन्न-भिन्न अर्थ, तथा उनका अपनी भाषा में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह सब जानने के लिए इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य खरीदिये। हिन्दी-रत्न और भूषण के प्रत्येक परीक्षार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥)

हिंदी-रत्न निबन्धमाला

इसमें १९२४ से लेकर अब तक के हिन्दी-रत्न परीक्षा में आये हुए लगभग ५० निबन्ध दिये गये हैं। हिन्दी-रत्न के विद्यार्थियों को यह पुस्तक ज़रूर देखनी चाहिए। मूल्य ॥।)

भारतवर्ष के इतिहास की प्रश्नोत्तरी

महाराष्ट्र केसरी के संक्षेप सहित

ले०—श्रीयुत जुगल किशोर चतुर्वेदी

इस पुस्तक में आरम्भ से लेकर पानीपत की तीसरी लड़ाई तक का इतिहास प्रश्न और उत्तर के रूप में दिया गया है। इसके अतिरिक्त 'हिन्दी-रत्न' परीक्षा में १९२७ से लेकर अब तक आये हुए प्रश्न उत्तर-सहित देकर तथा 'महाराष्ट्र केसरी' का संक्षेप देकर विद्वान् लेखक ने पुस्तक को और भी उपयोगी बना दिया है। हिन्दी-रत्न क प्रत्येक विद्यार्थी को इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिये। १९३३ की रत्न परीक्षा में ५ वें पत्र के सभी प्रश्न इस पुस्तक के अन्दर से आए थे। मूल्य ॥=)